Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

इन्द्र विद्यावाचस्पति
... ... तथा
हिन्दी ...
गुरुकुल कांगड़ी ...लय को
भेंट

A
1.1
विधा-ना

हिन्दी ज्ञानयात्री मंडल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ना ग रि क

०—८—०

मणि—२

ज ल त रं ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या RA
पुस्तक संख्या 61.1
आगत पञ्जिका संख्या 36,464

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति
भूतपूर्व उपकुलपति द्वारा पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय को दो हजार पुस्तकें सप्रेम भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवामें —
प्रो. इंद्रजी देहली
मुकाम: फैजपुर

२७/१२/३६

स्टाक प्रमाणीकरण ११८४-११८५

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

Stock Verification-2024

37576

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक सं० ... 26
आगत सं० 36,569
तिथि० ...
मुमुक्षु ग्रन्थालय वाराणसी.

RA.
611

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानयात्री ग्रंथमाला-मणि १ला

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

नागरिक

[श्री. एम. आर. श्रीनिवासमूर्ती बी. ए.,
लिखित "नागरिक" नामक कन्नड नाटक का अनुवाद]

अनुवादक

श्री रंगनाथराव दिवाकर एम्. ए. एल एल. बी.

अध्यात्म कार्यालय, धारवाड.

RA 61.1,SRI-N
37576

प्रकाशक

हिन्दी ज्ञानयात्री मंडल, धारवाड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

"हिन्दी ज्ञानयात्री मंडल" की एक "ग्रंथमाला" प्रकाशित करने का हमारा आयोजन आज कार्यरूप धारण कर रहा है। इसका श्रेय कर्नाटक के राष्ट्रीय नेता श्रद्धेय दिवाकरजी को मिलना चाहिये। क्योंकि उन्हीं की कृपापूर्ण नैतिक तथा आर्थिक सहायता के बल पर हम इस दिशा में क़दम बढ़ाने लगे हैं। मंडल के प्रवर्तक भाई सिद्धनाथ पंतजी की सलाह पर यह माला "ज्ञानयात्री आंदोलन" की पुष्टी के लिये ही प्रकाशित होगी।

माला के ग्रंथ अधिकतर दक्षिण भारत के ज्ञानयात्रियों द्वारा संपादित होंगे और उसका मुद्रण कार्य दक्षिण में होगा। अतः भाषा की त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। विश्वास है उदार-हृदय हिन्दी-प्रेमी इन भूलों को सुधारने की कृपा करेंगे।

इस ग्रंथ के प्रकाशन कार्य में विविध प्रकार के साहित्यिक सहयोग देनेवाले श्री एम. आर. श्रीनिवासमूर्तीजी, आचार्य कालेलकरजी तथा कर्नाटक के एक प्रसिद्ध साहित्यकार बेटगेरी कृष्णशर्माजी के हम बहुत कृतज्ञ हैं और उपयोगी ब्लाक्स देने के लिए 'विजयनगर साम्राज्य स्मारक मंडल' तथा 'अरुणोदय' कार्यालय बेलगाम के भी हम आभारी हैं। ग्रंथ को कम समय में सुंदर-रूप से छापनेवाले 'कलासिंधु प्रेस' के मालिक श्री रामचंद्रराव बेलगांवकर बी. ए.,(संपादक 'जयकर्नाटक') हमारे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

ता. २५-१२-१९३६
विजयनगर स्मारक दिन

गुरुनाथ जोशी
गौरव मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावना

उत्तर भारत के लिए विजयनगर का साम्राज्य सचमुच विस्मृति की गहराई में लुप्त हो गया है। स्कूल और कालेज के लड़के बेशक हिन्दुस्तान की तवारीख पढ़ते विजयनगर का नाम सुनते हैं, शायद वे इतना भी जानते हैं कि इसवी के १५वीं शताब्दि के अन्त में तीन ही बादशाहतें मशहूर थीं: बगदाद, चीन और विजयनगर, और इन तीनों में भी विजयनगर का साम्राज्य सबसे अधिक वैभवशाली और संस्कार-संपन्न था। लेकिन इतनी जानकारी से विजयनगर के साम्राज्य का रहस्य हृदयगत नहीं हो सकता है। विजयनगर का साम्राज्य सचमुच उस जमाने के ख्यालात के अनुसार धर्मसाम्राज्य स्थापन करने का एक प्रयत्न था। भारत का वैदिक धर्म उसकी अनेक शाखा प्रशाखायें लेकर जैसा बढ़ा था वैसा ही यावच्चन्द्र दिवाकरौ विजयी रहेगा ऐसे विश्वास से विजयनगर की प्रवृत्ति चली। वेदका पटन-पाठन, उसका अध्ययन, वौदिक और पौराणिक देवेदेवियों का अर्चन-पूजन, व्रत उत्सव, विधि-विधान, मंत्र-तंत्र और स्मृति ग्रंथों में बताई हुई वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना यही विजयनगर साम्राज्य का प्रधान हेतु था। 'सेनापत्यंच राज्यंच सर्वं वेद विदर्हति' यह मनु का वचन लोग परमार्थतया ग्रहण करते थे। हिन्दु जाति का पुराना राजकीय आदर्श विजयनगर में अजमाया गया। वह आदर्श कालग्रस्त है इतना अनुभव हो चुका। बौद्ध धर्म के प्रचार से हिन्दू-धर्म ने जैसा नया रूप धारण किया उसी तरह से विजयनगर के पतन के बाद हिन्दू-धर्म को साधुसंतों ने नया रूप दे दिया।

श्री. श्रीनिवासमूर्ती का यह नाटक अपने विचित्र ढंग से विजयनगर का हिन्दू आदर्श और आजकल का धार्मिक आदर्श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों का मुक़ाबला कर लेता है और अजरामर आर्य आदर्श को कर्नाटक–सिंहासन –स्थापनाचार्य विद्यारण्य के मुंह से यह परिवर्तन ईश्वरी संकेत के अनुसार ही है ऐसा कह देता है। इस नाटक का नायक एक आधुनिक नवयुवक है। उसका असंतोष जितने जोर से नाटककार ने व्यक्त किया है उतना जोश माधवाचार्य के समन्वय में दीख नहीं पड़ता है। पुराने ज़माने के दोष तो हम पूरे पूरे देख सकते हैं। भविष्य का चित्र चाहे इतना उज्वल क्यों न खींचा जाय उसमें वास्तविकता की मात्रा कुछ न कुछ कम ही रहती है। इस नाटक में भी वैसा ही हुआ है।

जिसने विजयनगर का इतिहास पढ़ा है और जिसने हंपी के भग्नावशेष प्रत्यक्ष देखे हैं उसका हृदय तो इस नाटक के एक एक शब्द के साथ अस्वस्थ हो जायगा। रंगभूमि पर यह नाटक प्रेक्षकों को शायद मंत्रमुग्ध नहीं कर सकेगा। लेकिन हरएक संस्कारी भारतीय आत्मा को यह छोटासा नाटक प्राचीन काल के वैभव को और उसकी आकांक्षा ओं को प्रत्यक्ष करायेगा। और मेरे कर्नाटक के अभिमानी नवयुवकों के हृदयों के एक पहलू को अच्छी तरह से प्रगट करेगा। इस नाटक की भाषा में जो संस्कारिता और संयम है उसके लिए नाटककार अभिनंदन के पात्र हैं। अनुवादक और प्रस्तावना लेखक दोनों के लिए हिन्दी का वाहन अपरिचित जैसा है तो भी इस साहस के द्वारा दोनों राष्ट्रभाषा की यथाशक्ति उपासना ही किया चाहते हैं। राष्ट्रभाषा में भारतवर्ष के सभी प्रांतों की आकांक्षायें जब व्यक्त होंगी तभी हमारी राष्ट्रभाषा और राष्ट्र-हृदय भारत जितना समृद्ध होगा और समृद्ध हृदय ही स्वातंत्र्य के योग्य हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटक का इतिहास आस्तिक बुद्धि से पढ़ने से कर्नाटक का भावी मिशन स्पष्ट हो जाता है। कर्नाटक प्रथम से आज तक अनेक आत्मपरायण संस्कृतियों का संगम-स्थान है। मानव हृदय अगर इन संस्कृतियों का रहस्य बराबर समझ लेता तो उनके सहयोग से विग्रह पैदा नहीं होता, लेकिन एक जीवन मधुर संगीत पैदा हो जाता।

कर्नाटक का व्यक्तित्व, जैनधर्म, लिंगायतधर्म, वैष्णवधर्म, वेदान्तियों का भक्ति--मार्ग अद्वैत--मार्ग और सामान्य जनता का हृदय--धर्म इन सब के मिलन से परिपुष्ट हुआ है और ये सब धर्म अथवा जीवन व्यवस्थायें अहिंसा परायण ही हैं। श्री बसवेश्वर ने अहिंसा मूलक सर्व संग्राहक सत्याग्रही धर्म का ही प्रचार किया। जैनधर्म ने 'अहिंसा परमो धर्मः' के सूत्र का ही प्रचार किया। वैष्णव धर्म में अगर कुछ है तो पतितोद्धार की ही भावना सर्वोपरि है। भागवत धर्म में मैत्री, करुणा, मुदिता, और उपेक्षा की भावना का ही विधान है। भक्तिमार्ग में तो घट घट में परमात्मा का ही स्वरूप देखने का उपदेश है। अद्वैत सिद्धान्त में तो सर्वत्र ईश्वर की ही विभूति देखने का आग्रह है। जब बाघ, सिंह, गाय, कुत्ता, सर्प आदि सब प्राणियों में एक ही आत्मा का निवास है तब हम किसके बारे में निराश होवें? मनुष्य का अविश्वास अन्त में जाकर नास्तिकता का ही एक रूप बन जाता है। यह नास्तिकता जब दूर होगी तब कर्नाटक में, भारतवर्ष में और समस्त विश्व में धर्म–साम्राज्य की स्थापना होगी और धर्म–साम्राज्य ही एक मात्र शुभ साम्राज्य है।

कर्नाटक का प्रवासी बालक

काका कालेलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पात्र परिचय

नागरिक— एक आधुनिक सुशिक्षित नवयुवक

विद्यारण्य— माधवाचार्य, कर्नाटक-सिंहासन स्थापनाचार्य

यमराज— मृत्यु देवता

ईश्वर— सर्वकर्ता, परमात्मा

ऋषि, पूजारी, सामान्य जनता आदि

चित्र परिचय

१ विरूपाक्ष मंदिर का गोपुर (मुख पृष्ट)

२ विरूपाक्ष मंदिर का पूर्वभाग

३ तुंगभद्रा तीर

४ उग्रनारसिंह

५ हजार रामस्वामी का मंदिर

६ महानवमी की पहाड़ी

७ विजय विठ्ठल स्वामी का कल्याण मंडप

८ गजशाला

९ विजय विठ्ठल मंदिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

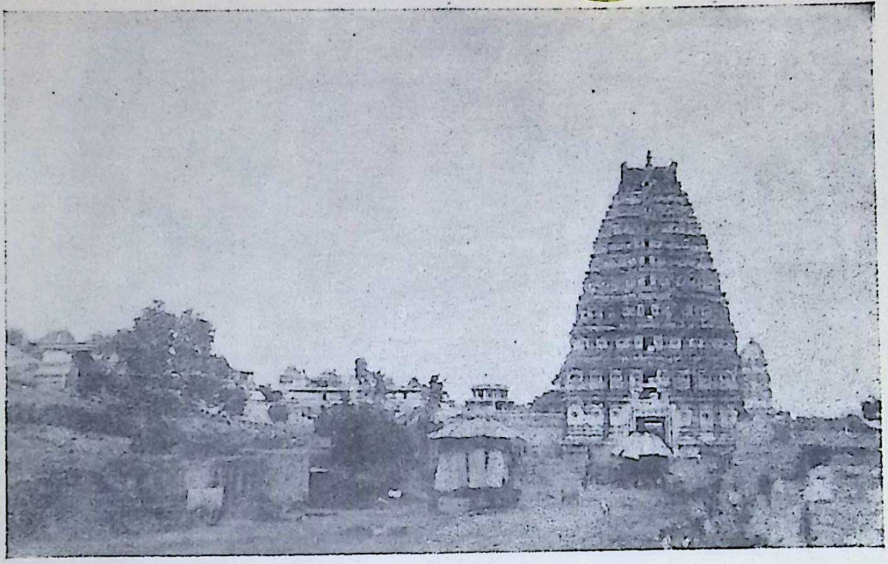

विरूपाक्ष मंदिर का पूर्व भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

दृश्य १

[पंपाक्षेत्रमें पंपापति–महादेव–का एक टूटा फूटा मंदिर। नागरिक प्रवेश करता है]

नागरिकः– मैं यह क्या देख रहा हूँ? जिधर तिधर भग्नावशेष ही नज़र आते हैं। हमारे भाइयोंके आँसुओं से सप्तसागर भरे हुए हैं। नष्ट-भ्रष्ट राज्य-साम्राज्यों के ढेर सप्त पर्वतों के समान सामने खड़े हैं। सिवा इसके विधाता की इस सृष्टि में कुछ योग्य मानवी जीवन या उसका चिन्ह नहीं दिखाई देता। यहाँ क्या कुछ सार या श्रेष्ठता का कुछ निशान प्रतीत होता है?

[मंदिरमें से घंटी की आवाज़ सुनाई देती है]

हाँ, अब तो मंगलारती का समय है। हाय! हाय! वह ईश्वर कहाँ है? यदि हो तो ऐसी दुरवस्था यहाँ पर कैसे मौजूद है? इस प्रश्न का उत्तर मुझे कौन देगा? पूर्वजों ने पत्थर और पीतल पर विश्वास रखकर मंदिर बना दिये। मौक़े पर– संकट समय में– ईश्वर आकर रक्षा करेगा, इस आशा से पूजा अर्चा भी की। परन्तु क्या ईश्वर जीता है? देखूंगा, खोज करूंगा।

[चला जाता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य २

[पंपापति के मंदिर में मंगलारती हो रही है। पश्चात् पुजारी तीर्थप्रसाद बांटने लगता है। भक्तगण आतुरता से देवदर्शन के लिये आगे बढ़ते हैं। पुजारी उनको रोकता है]

पुजारीः— क्यों इतने नज़दीक आते हो? यह तो सतयुग की मूर्ति है। हटो, हटो। दूर रहो।

पहला भक्तः— क्या सतयुग से यह मूर्ति यहाँ मौजूद है?

पुजारीः— हाँ ज़रूर। यह पुण्यस्थान है। इस हेमकूट में ही परमेश्वर ने तपश्चर्या की।

पहला भक्तः— क्या कहते हो? परमात्मा भी तप किया करते हैं!

पुजारीः— नहीं तो? सतयुग में उन्हों ने यहाँ पर तप किया।

पहला भक्तः— भगवान् तो सर्वशक्तिमान हैं। फिर ऐसा कौनसा उद्देश था जिस की सफलता के लिये उनको तप करना पड़ा?

पुजारीः—लोककल्याण, और क्या? परमात्मा का उद्देश और दूसरा क्या हो सकता है?

पहला भक्तः— ईश्वर क्या वैसे तप में ही लिपट रहे?

पुजारीः— वह तप से नहीं उठते तो इस जग की हालत न मालूम क्या होती? असुरों की बाधा जब बढ़ गई तब देवताओं ने कामदेव को बुलाया और आज्ञा की "हेमकूट में परमेश्वर तपमग्न हैं, पास ही देवी पार्वती खड़ी है। वहाँ तुम जाओ;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कुसुम बाण से महादेवजी को सचेत करदो"। सुनते ही कामदेव ने अपना कर्तव्य पालन किया। फिर परिणाम ऐसा हुआ कि कोपाविष्ट होकर तपभंग करनेवाले कामदेवजी को महादेवजी ने तीसरे नेत्र की अग्नि से जलाकर ख़ाक कर दिया और आप कैलास को लौट गये।

पहला भक्तः– ऐसा कौन है जो महादेवजी को छेड़कर बच जाय?

दूसरा भक्तः– देवताओं के कहने पर कामदेव ने ऐसा कार्य क्यों अपने सिर पर उठाया?

तीसरा भक्तः– लोकोपकार करनेवाले को भी इस तरह मृत्युदंड मिले! यह कोई न्याय है?

पुजारीः– यही श्रेयस्कर है कि हम खुद अपना बलिदान देकर भी परोपकार करें। उस समय पार्वतीजी ने पुनः तपश्चर्या की और महादेवजी का अनुग्रह प्राप्तकर लिया। तब षण्मुख का जन्म हुआ और उसके हाथ से तारकासुर का संहार हुआ। यह क्षेत्र सामान्य नहीं है। समझे?

[नागरिक आता है और आगे बढ़ता है]

नागरिकः– नहीं नहीं। यह सामान्य क्षेत्र नहीं है। मुझे मालूम है।

पुजारीः– कौन हो? कैसे इधर तक आ पहुँचते हो? भाई दूर रहो।

नागरिकः– देखना चाहता हूँ कि क्या है।

पुजारीः– देखना चाहते हो? क्या यह परमेश्वर नहीं देखते? यह मंदिर नहीं दिखाई देता तुम्हें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

नागरिकः– क्या परमेश्वर है! यहाँ मंदिर है!! कहाँ पर है, मुझे तो परमेश्वर कहीं दिखाई नहीं पड़ते।

पुजारीः– देखो, ज़रा आँखें खोलकर देखो वहाँ। अब नहीं दीखता? यह मंदिर तुमको नहीं प्रतीत होता? यहाँ मैं पुजारी खड़ा हूँ, मैं नहीं दीखता तुमको?

नागरिकः– क्रोध क्यों करते हैं महाराज? आप तो मुझे दीखते हैं, वह ईश्वर नहीं दीखता। कहाँ छिप गया किसे मालूम। वह वैकुंठ क्या चीज़ है? वह कैलास क्या है?........

पुजारीः– मूर्ख कहीं का! ले लो यह तीर्थप्रसाद। मंदिर का भी ज्ञान होगा और परमात्माकी भक्ति भी तुह्मारे हृदय में प्रकट होगी।

नागरिकः– मैं नहीं चाहता।

पुजारीः– हाय! क्या कहा तुमने? क्या यह भी कहने की बात है!

नागरिकः– देखो, वहाँ खड़े हैं लोग हाथ पसार के। उनको अपना तीर्थप्रसाद दिया करो।

पुजारीः– महामूढ, मतिहीन अर्थात् गतिहीन भी। पंपापति का तीर्थ और यह हंपीराजेश्वर का प्रसाद जन्मजन्मान्तर को पावन करनेवाले हैं। पापों को जलाकर भस्म करने की शक्ति इन में है।

नागरिकः– कहाँ है वह हंपी का राजा? क्या वह कीर्तिशेष हंपी का राजा इस पत्थर में रहता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

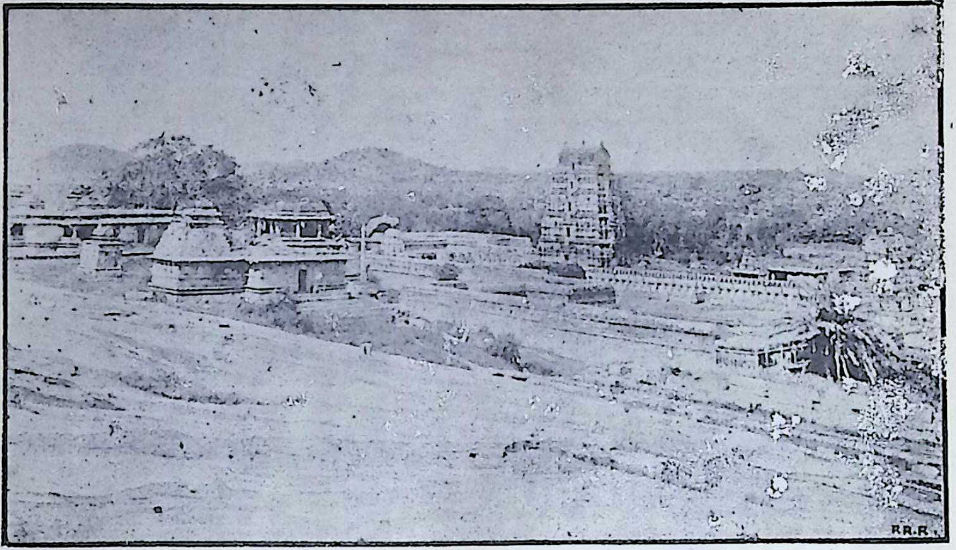

तुंगभद्रातीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र विद्यावाचस्पति
चन्द्रलोक, जवाहर नगर
दिल्ली द्वारा
गुरुकुल कांगड़ी पुस्तकालय को
भेंट

नागरिक

पुजारीः— मूर्खशिरोमणि या कहो विल्कुल ही बेअक़ल आदमी। परमेश्वर को तुम दोष लगाते हो! उसको पत्थर कह कर तिरस्कृत करते हो! संभलो, तुम्हारी ज़बान सुकड़ न जाय और तुम्हारी आँखें मिंच न जायं। कौन है यह नास्तिक? निकालो इस पापी को यहाँसे। निकालो इस वेदबाह्य व्रात्य को हमारे सामने से।

[लोग नागरिक को पकड़ लेते हैं]

पहला भक्तः— देखिये, क्या काल महिमा है।

दूसरा भक्तः- ऐसे पवित्रस्थान में इसे कैसे यह दुर्बुद्धि हो गई?

तीसरा भक्तः— जो कोई यहाँ आता है, पापमुक्त होकर पुण्य संचय कर लेता है। इसका हिसाब तो उलटा ही है। यह पापात्मा अपना पुण्य खोता है और पाप संग्रह करता है।

पहला भक्तः— यह महादुष्ट काल की महिमा है, और क्या?

नागरिकः— मैं जाता हूँ, अभी चला जाता हूँ। अंदर कुछ धूमधाम व शोर-गुल सा सुना। कुतूहल के मारे देखना चाहा कि क्या है। अभी देख लिया, बस।

पुजारीः- छोड़ दीजिये उसे। ओ, पापी, चंडाल। इसको तुम ख़ाली शोर कहते हो। महादेवजी की पूजा को तुमने धूमधाम बना दिया। ऐं! हमारे स्वामी पंपापति की पूजा कभी गुल या शोर कहला सकती है? सुना नहीं तुमने कभी इस देवता का अद्भुत चरित्र? नहीं तो सुन लो। भक्ति उत्पन्न होगी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम मुक्ति भी पावोगे। विजयनगर पर हमला करके जब म्लेच्छों ने आगे बढ़कर पंपापति के मंदिर का नाश करना चाहा—इस मंदिर का नाश—समझे, और इधर आ पहुँचे तब क्या हुआ? उनकी आँखें मिच गईं और वे अंधे हो गये! इस तुंगभद्रा में प्रलयसागर का सामर्थ्य प्रकट हुआ और वैरी बह कर उस समुद्र में डूब गये। व्यर्थ क्यों बकते हो और परमेश्वर को दोष लगाते हो? चिरकाल नरक में सड़ने की क्यों तैयारी कर रहे हो? पंपापति को कोई सामान्य देवता मत समझो। उसकी महिमा जान कर हेमकूटस्थ समस्त ऋषिगण उसकी पूजा करते हैं। रात के सन्नाटे में बार बार सुस्वर गीत की और उन के मंद मंद पदाघात की ध्वनि सुनने में आती है। उस अद्भुत पूजाविधिं के आदि और अंत को कौन जान सकता है? अब स्वीकार करो यह तीर्थप्रसाद। ख़ास नास्तिकों के लिये यमराज ने एक घोर नरक निर्माण कर रक्खा है। उस नरक को मत जाओ। नास्तिकों की गति की इच्छा मत करो।

नागरिकः— आप तो बहुत ही बुद्धिमान प्रतीत होते हैं। दंतकथायें सीखकर सुनाते हैं, और ये लोग भी पागल बन आपको दक्षिणा देकर संतुष्ट हो जाते हैं। कथाओं का तो न आगा न पीछा, न सिर न पैर, न आदि न अंत। आप कहते हैं और वे सुनते हैं। लोगों की तो भेड़ियाधसान की आदत होती ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

पुजारीः– हे पापी, क्या मैं दंतकथायें सुनता हूँ! जब महादेवी यज्ञकुंड में गिर पड़ी तब वह समाचार सुनकर महादेवजी ने अत्यंत कोपाविष्ट होकर अपनी जटायें क्या भूमिपर नहीं पटकीं? क्या तत्काल वीरभद्र का अवतार नहीं हुआ? वीरभद्र स्वामी ने दक्ष और उसका यज्ञ इन दोनों को मिटाकर अमरगण में क्या भय नहीं उत्पन किया? अज्ञान के कारण तुम ऐसे बक रहे हो, और क्या?

नागरिकः–अच्छा। मैंने सुन लिया। अज्ञान से ही 'उदरनिमित्तं बहुकृतवेषम्'।

पुजारीः–अहह महादेवजी! आप ही साक्षी हैं। पूजा क्या उदरभरण के लिये होती है? अरे पापी, महापापी! क्या ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है? हमारा पंपापति नहीं है क्या? क्या इस हेमकूटमें परमेश्वर ने तप नहीं किया? क्या देवी पार्वती ने भुवनेश्वरी माता का अवतार नहीं लिया? क्या वह महामहिमाशाली, वह भगवंत, वह पंपाधिनाथ, वह जगन्नायक अस्तित्व में ही नहीं? क्या तुह्मारी पापी ज़बान यही कहती है?

नागरिकः– कहो तुम, आगे कहो; मैं सुन रहा हूँ।

पुजारीः– पुण्य से ही नरजन्म प्राप्त हो सकता है। तीर्थयात्रा मोक्षदायी है। यह पंपाक्षेत्र उत्तमोत्तम है। तुम यहाँ आये हो। ये सब घटनायें तुह्मारे पूर्व जन्मों के पुण्यों से, तुह्मारे पूर्वजों के सत्कर्मों से हुई हैं। यहाँ आये हो तो जन्म को सफल बना लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित है। क्या फिर श्वान सूकर योनि को जाना चाहते हो? क्या वहाँ दुख से पीड़ित होना योग्य होगा? नहीं, नहीं, उसका नाम तक ज़बान से न निकालो। भक्तियुक्त होकर मुक्ति का मार्ग देख लो। यह लो इस तीर्थप्रसाद से ही भक्ति मुक्ति दोनों तुम्हें सुगम होंगी। आस्तिक्यभाव से यदि तुम ईश्वर की प्रार्थना करोगे तो तुम्हारी रक्षा वह अवश्य करेगा।

नागरिक—: मुझे कुछ नहीं चाहिये। उस ईश्वर की आँखें नहीं और इस जनता को अक़ल नहीं। फलपुष्प मिल जाने से तृप्त हो जानेवाले ये दरिद्री देवता क्या? और इन देवताओं पर विश्वास करके मूढ हुए दुष्ट ये लोग क्या? हाय! मुझे आशा नहीं कि यह मूर्खता सुगमता से हट जायगी। आप को देख के मैं हैरान हो गया हूँ। आप ने लंबी चौड़ी बातें बनाईं। कंठ सूख गया होगा। आप को पेटभर तीर्थप्राशन करना चाहिये। यदि जाना हो तो मैं अकेला ही नरक को जाऊंगा। वहाँ अभी अवकाश नहीं रहा, पापियों के जमघट से ख़ूब भर गया है। ये लोग बेचारे आपकी कृपासे और प्रसाद के प्रताप से कैलास को पँहुँच जायं और वहाँ सुखी हो जायं। वह है पुण्यवानों का स्थान और वहाँ है भी बहुत सी जगह।

[नागरिक चला जाता है]

पुजारी:— हाय! हाय! महादेवजी! गिरिजानाथजी! ऐसा मैंने कौन सा पाप किया था कि नास्तिकवाद की कठोर बातें मुझे सुनने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मिलीं। तीर्थप्रसाद उसने छुआ तक नहीं और ईश्वर को दोष देता ही चला गया। हाय शंकरजी यह क्या दशा है?

[पुजारी मूर्छित हो जाता है]

भक्तगणः– अरे क्या हुआ, यह क्या हुआ? वह पापी नास्तिक यहाँ क्यों आया?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य ३

[नरसिंह की मूर्ति और सदाशिवलिंग के पास नागरिक आ रहा है]

नागरिकः–वहाँ कहाँ हो तुम? वे लोग तो दिवाने बन गये हैं। किसी धातुमूर्ति में या पत्थर की मूर्ति में तुम रहते हो ऐसा मान लेते हैं और प्रणाम करते हैं, शरणागत होते हैं, कीर्तन गाते हैं, और वर भी मांगते हैं। यह देखकर मुझे बहुत ही रंज हो रहा है। क्या तुम मंदिर में रहते हो? क्या लिंग में तुम्हारा वास है? वहाँ है केवल कपूर की आरती और दीप-धूप का धुआँ। सारा मंदिर धूम्रमय और कोलाहलमय है। मैं सच कहता हूँ वहाँ तुम नहीं हो।

[लोग प्रवेश करते हैं]

कुछ लोगः– हाँ, वह यहाँ पर मिल गया, मिल गया।

पहलाः– यह पापी ही कारण है।

कुछ लोगः– इस पापी आदमी को खींच ले जायंगे मंदिर को।

दूसरे कुछ लोगः–इस से अवश्य पुजारी के पांव पड़कर क्षमाप्रार्थना करवायेंगे।

नागरिकः– हे ईश्वर, आप यहाँ कहीं हमारे देश में हैं? पुजारी तो पूर्ण विश्वास रखता है। मेरे भाषण से वह क्रुद्ध हो गया और दुखी भी। उसकी हालत मैं देख नहीं सका। उसने कुछ नीति की बातें सुनाईं और कुछ तुम्हारी महिमा की भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर उन बातों में न संगति थी न संबंध । इस में पुजारी की कुछ ग़लती नहीं । सांप्रदायिक कथायें कभी सुसंगत हो सकती हैं ? स्वयं पुजारी ने तो कुछ नहीं देखा होगा । कहता है ईश्वर ने वैरी की आँखें मिटा दीं और प्रलय काल का जैसा समुद्र उसे बहाकर ले गया ।

पहला:— देखो, देखो, इस का खेल देखो । हमारे देवताओं को दोष लगाता है । इतने देव हैं पर यह कहता है कि एक भी नहीं । बकता है कि ये सब पत्थर हैं । पंपापति की श्रेष्ठता तो तनिक भी नहीं जानता । यह क्या जान सकता है परमात्मा की महिमा ?

नागरिक:— महिमा कहते हैं महिमा !

पहला:— हाँ, महिमा पुराणों में है । तुम को ज्ञात है ?

नागरिक:— काहे की महिमा ! गत काल में हरिहर नगर में हरिहरेश्वर को जब वैरीओं ने उखाड़ कर तुंगभद्रामें डुबा दिया तब परमात्मा ने क्या किया, बोलो । क्या तुम्हारा भगवान उस समय ग़ोता लगा कर मीठा सा पानी पी पी कर तृप्त हो गया ? उस समय सुन लेनी थी वह कान फाड़ के अंदर घुस जानेवाली वेदघोष की आवाज़ । मैं पहचानता हूँ वह ध्वनि । ऐसे क्यों जमा होते हैं ? आप क्या समझे ? है, परमेश्वर है, ऐसा मानकर पत्थर की मूर्तियों को ले बैठे और बाहुबल खो बैठे । डरपोक कहीं के ! पापी ! महापापी !!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

पहलाः– क्या कह रहा है? क्या कुछ सत्य है इस में?

दूसराः– हरिहर नगर मैं नहीं गया। मुझे नहीं मालूम।

तीसराः– नहीं गया होगा, हो सकता है।

पहलाः– कौन जानता है पहिले क्या हुआ?

दूसराः– ऐसा कोन है जिसको सब इतिहास ज्ञात है?

तीसराः– तो क्या सब कुछ हो गया है।

चौथाः– फिर वह ईश्वर चुप क्यों बैठा?

पहलाः– कौन कह सकता है?

दूसराः– क्या ईश्वर को गाढ़ी नींद आ गई थी या उसको संसार की चिन्ता लगी थी?

तीसराः— क्यों, ईश्वर नहीं था ऐसा भी कह सकते हैं?

पहलाः— नहीं भाई, ईश्वर तो अवश्य होगा।

नागरिकः– कहाँ है जी ईश्वर? कहाँ है वह ईश्वर? चमड़ा बचाकर शूकर की तरह यहाँ वहाँ भागनेसे क्या कभी भगवान का दर्शन हो सकता है? व्यर्थ यहाँ पर क्यों आये हो? फल फूल देकर परमात्मन्! 'प्रसन्न हो जाइये' ऐसे कहने से क्या कभी परमात्मा सामने आ जायगा? शक्ति प्राप्त कर लो तो महादेव खुश होगा और मुक्ति भी मिलेगी, इहलोक और परलोक में सुख-समृद्धि पाओगे। जिसको ईश्वर कहते हैं वह है ही बलशाली और प्रतापवान्। जो बलशाली है लोग उसी की पूजा किया करते हैं और उससे ही वर मांगते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

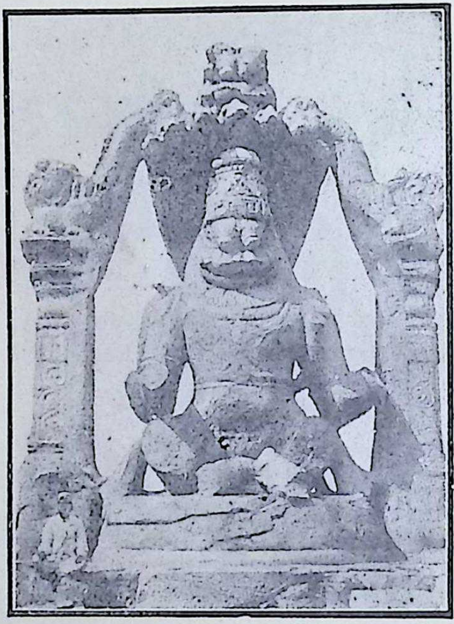

उग्रनारसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[नरसिंह की मूर्ति के नज़दीक जाता है]

केवल मूर्तियों को सिर झुका के लोगों ने वर मांगे थे, पर जो खुद को नहीं बचा सकता वह दूसरे की रक्षा क्या करेगा ? हे नरसिंह! तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हो गई ? देवताओं में तुम सब से श्रेष्ठ हो और हो भी भयरूप। सिंह का भव्य मुख, प्रखर नेत्र, कुठार जैसे नख और भीषण आकृति इतनी सामग्री होने पर भी ऐसी अवस्था तुम्हारी क्योंकर हो गई ? एक अबोध दर्शनोत्सुक बालक ने जब 'मुझ पर प्रसन्न हो जाओ' कहकर करुण स्वर से तुम्हें पुकारा तब क्या सच ही तुमने शिलास्तंभ को फोड़ डाला और दुरात्मा दैत्यराज को पटक कर उस का पेट फाड़ दिया! क्या यह सच है कि तुमने उसकी आंतो की माला बनाई और प्यार से पहन ली ? हाय हाय, यह सच हो तो जब शत्रु तुम्हारे पत्निरत्न इस भूदेवी को क़ैद करके ले चले तब एक ही हुंकार से फूंक मार कर क्यों नहीं उड़ा दिया ? कहो तुम चुप क्यों बैठ गये ?

पहला:– अरेरे! इस को क्या हो गया ? इसकी आँखें डबडबाती हैं।

नागरिक:– ऐ ईश्वर! वेदों में और शास्त्रों में, पुराणों में और इतिहासों में तुम होगे, परन्तु इस धरती पर तो तुम्हारा वास कदापि नहीं है। भूतल पर केवल शत्रुओं का पदघात है और है जंघा और तुम्हारे भुजायें तोड़ डालने का निंद्य कर्म। ओह! यह क्या दृश्य है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा:– क्यों भाई, पत्थर के साथ क्या बातचीत कर रहे हो? चलो।

तीसरा:– अरे भाई, ऐसी बातें मत कहो। कोई क्या जानता है? यदि इच्छा हो तो परमात्मा पत्थर में भी प्रकट हो सकता है।

पहला:– हाँ, अवश्य यह बात भी सच है।

[नागरिक सदाशिवलिंग के पास जाता है]

नागरिक:– हे त्रिपुरारि! क्या तुह्मारी भी ऐसी अवस्था हो गई! उस दिन से तुह्मारा पता ही नहीं। क्या तुम इधर अपनी छाया छोड़कर कैलास को पधारे? क्या सर्वमंगला जगदंबा के साथ विनोदालाप में कालयापन करते रहे? कहते हैं कि तुमने कामदेव को ख़ाक कर दिया। सुकोमल कुसुम ही जिसका अस्त्र है उस कामदेव को जलाने में ऐसा कौन सा पराक्रम है और ऐसी कौनसी शक्ति की आवश्यकता है? जिस कालरुद्राग्नि ने दैत्यों के सब दुर्ग जला दिये उस में क्या आज शत्रुसैन्य का संहार करने की शक्ति नहीं है? लोग तुह्मे चौदह भुवनों का नाथ कहते हैं और पत्थरों की पूजा करते हैं।

पहला:– सुना है कि भगवान् तृण काष्ट पत्थर आदि सब जगह व्याप्त है। भक्ति से यदि आवाहन करें तो पत्थर की मूर्ति से ही वह प्रकट हो जायेगा।

नागरिक:– शिला से परमात्मा प्रकट होगा इस विश्वास से पूजाभिषेक करते करते ही राज्य खो बैठे। मतिहीन पागल मानव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिलाओं में, मिट्टी में, और वृक्षों में भगवान है इस अंधश्रद्धा से हाथ जोड़कर या कहिये हाथ बांध कर बैठ गये तो क्या भगवान आ गया? क्या तुह्मारा उद्धार हो गया? कुछ हिसाब है कि कितने देवी-देवता हैं? उन्होंने क्या तुह्मारी रक्षा की? और क्या तुम आशा रखते हो कि भविष्य में वे तुह्मारी रक्षा करेंगे? ईश्वर क्या वस्तु है यह कुछ तुम जानते हो? मंदिरों में पूजा अर्चा करने की क्या आवश्यकता है? चले जाओ यहाँसे। निर्बलता ही पाप है और सबलता ही पुण्य। पुण्य-पापों का यह विवेक समझ लो और मंदिरों को बना दो शक्ति का अधिष्ठान। नाक क्यों पकड़ लेते हो? क्या तुम नहीं पहचानते इस कलियुग को? नहीं देखते इस युद्धयुग को? क्या तुमने कभी देखा है कलिराज का अवतार? नहीं तो देख लो। इस अवतार में परमात्मा का वीररूप कैसा है यह अवश्य देखो। वह आता है सुसज्जित कवचधारी होकर, शिरस्त्राण पहन कर, घोड़े पर सवार होकर। तलवार घुमाता और तीर चलाता हुआ वह आता है दुष्टों का संहार करने के लिये। वह हाथ पसार कर भिक्षा मांगते एक भिखारी की तरह नहीं आता। वह है पौरुषात्मा, जड़तामस की मूर्ति नहीं।

पहलाः– इस का कहना भी सच जान पड़ता है।

दूसराः– वैसा ही करना उचित है।

चौथाः– अरे भाई, यह क्या जानता है! योग्य समय पर ईश्वर ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब करता है और कराता है। 'शंभो, शंकर, शुभंकर' कहते हुए हमें ईश्वर की प्रार्थना करनी चाहिये। यही हमारे लिये काफ़ी है।

नागरिक:— ईश्वर करता है और कराता है! क्या करायेगा ईश्वर! बनायेगा तुम सब को अच्छी तरह से। शंभु शंकर पुकारते हुए चुपचाप अपनी बुरी हालत देखते रहनेवाले बुज़दिल कहीं के। तुम सब को अंगूठा दिखायेगा परमात्मा। प्रार्थना करते हो, पर क्या मांगते हो कुत्ते? संतति, संपत्ति और धनदौलत? क्या बैरीओं की पराजय मांगते हो? तुम में बालबचों की रक्षा करने का सामर्थ्य तनिक भी नहीं और जब बैरी लूट लेंगे तब ख़ूब रोना भी नहीं जानते हो तुम! 'महाराज, जी हुज़ूर, मूर्तिभंग न किया करो' ऐसे दीन स्वर से याचना करनेवाले डरपोक; तुम्हें परमात्मा अवश्य ही भूल गया है! केवल शिखा-सूत्र से अभी तुम जाति को पहचानते हो, गुण-कर्म से नहीं। मानापमान की फ़िक्र भी तुम्हें नहीं रही और परमात्मा से प्रार्थना कर रहे हो! ऐसे बुज़दिलों के लिये ये टूटे-फूटे देव ही सही हैं।

[नागरिक चला जाता है]

पहला:— क्यों भाई, चुप क्यों खड़े हो? उसने तो गलियों में गालियां दे डालीं।

दूसरा:—एक बार पकड़ रखना था उसे। तुम ने छोड़ क्यों दिया?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसराः–मेरा इरादा था कि कुछ उसे चपत दूँ। इतने में वह चला गया।

पहलाः– जो हुआ सो हो गया। अभी पुकारो कि त्रिमूर्तियों का मंगल हो जाय। अब क्या?

दूसराः– वह तो पागल है। उसके साथ क्यों ठहरें?

तीसराः–सच है वह पागल नहीं होता तो ऐसा क्यों करता? कभी चिल्लाता है कभी रोता है और कभी गाली देता है।

पहलाः– यथार्थ है। हमने पहिले से ही इस बात को नहीं जान लिया। पागल के साथ हम भी सब पागल बन गये

दूसराः– हम इतनी छोटी सी बात भी नहीं समझे और लगे इसके पीछे दीवानों की तरह।

तीसराः— अब चलो, समय बहुत हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य ४

[चांदनी रात–हजार रामस्वामी के देवालयके समीप नागरिक आता है

नागरिकः– लो। यह और एक गिरा हुआ मंदिर है। मंदिरों का तो कुछ हिसाब ही नहीं। पत्थर हैं और हैं जिधर तिधर गिरी हुई दीवारें। परंतु अफ़सोस है कि परमात्मा कहीं भाग गया है। शिल्पकारों ने तो सुंदर मूर्तियां बनाईं और जड़ शिलाओं में जान डाल दी इस निमित्त से कि वहाँ ईश्वर का वास हो जाय। किन्तु सब व्यर्थ हो गया। महादेव ने यहाँ पर अवतार नहीं लिया। आजकल हम न मुर्दे हैं न ज़िंदा।

[चारों ओर देख कर मंदिर के मंडप में बैठ जाता है]

बहुत ही थक गया हूँ।

[लेटता है और उसे नींद आ जाती है। थोडी देर में उसे कोई पुकारतासा हिलातासा मालूम होता है]

अशरीरवाणीः– उठो, उठो, जागो।

[नागरिक उठ बैठता है]

नागरिकः– मुझे किसने पीटा ? 'उठो' ऐसा किसने पुकारा ?

[कुछ देर बाद]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो एक बार आया वह क्या फिर नहीं लौटेगा ?

[फिर लेट जाता है]

अशरीरवाणीः– उठो उठो, मत सो जाओ।

नागरिकः– यह क्या है ? फिर किसने पीटा मुझे ?

[उठकर बैठ जाता है]

अहाहा, पीठ में दर्द हो रहा है। इस उजाड़ देवालय में कौन आ बैठा है किसे मालूम। समझ में नहीं आता कि प्रेत है या भूत। कुछ दिखलाई तो नहीं पड़ता। आड़ से ही पीड़ा दे रहा है कोई। क्या हवा चल रही है, सब वृक्ष जड़ से हिल रहे हैं, और भूमि भी थर्राती है। अभी इधर ठहरना कुछ क्षेमकर नहीं दीखता। यह तूफ़ान क्या करेगा कुछ कह नहीं सकता।

नीचे उतरकर दूर खड़ा होता है—मण्डप एकाएक गिरपड़ता है और नागरिक चौंक उठता है]

ओहो, यह मंडप ही गिरपड़ा। मेरी ज़िन्दगी ख़तम हो गई होती, एक क्षण में ही समझो! बिना जाने सो गया था। कौन है वह करुणानिधि कि जिसने मुझे पहिले ही पुकारा, हिलाया और पीटा भी। भविष्य की आपत्ति की मुझे सूचना दी और मेरी रक्षा की। अभी मैं कैसे जानूँ कि वह कौन है ? यह मंदिर तो बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

निर्जन है, यहाँ एक बच्चा तक नहीं। क्या मुझे ईश्वर ने बचाया ? होगा? क्या उसमें इतनी करुणा भरी है? मैं तो मानों केवल एक क्षुद्र अणुजीव हूँ। मुझे बचाने की उसे क्या ग़रज़ है? हीन दीन मानव पर ईश्वर की कृपा क्यों होगी? यह गूढ रहस्य समझ में नहीं आता। उसने आकर पुकारा और हिलाकर उठाया भी। हे ईश्वर! साम्राज्यलक्ष्मी पर जब आफ़त आगई तब तुमने इतनी दया भी नहीं की! इसी तरह उस की रक्षा क्यों नहीं की तुम ने?

[अदृश्य ईश्वर का स्पष्ट उत्तर आता है]

ईश्वरः– मेरी इच्छा! तुम कौन हो पूछनेवाले?

नागरिकः– [कुछ समय तक स्तंभित रहकर] यह गहरा गर्जन कहाँसे आया? इस मंदिर में कौन है? अरे तुम कौन हो? आ जाओ बाहर। अब कुछ आवाज़ नहीं निकलती। न कोई बाहर आता है और न कोई उत्तर देता है। क्या परमेश्वर है कि पिशाच! कोई भी हो, मैं भूत प्रेतों से डरनेवाला नहीं हूँ। यहाँ पर खड़ा होकर देखूंगा क्या होता है।

[ईश्वर का प्रवेश]

अहा, चकाचौंध करनेवाली क्या रोशनी है! यह कौन है?

[किंचित् पीछे हटता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

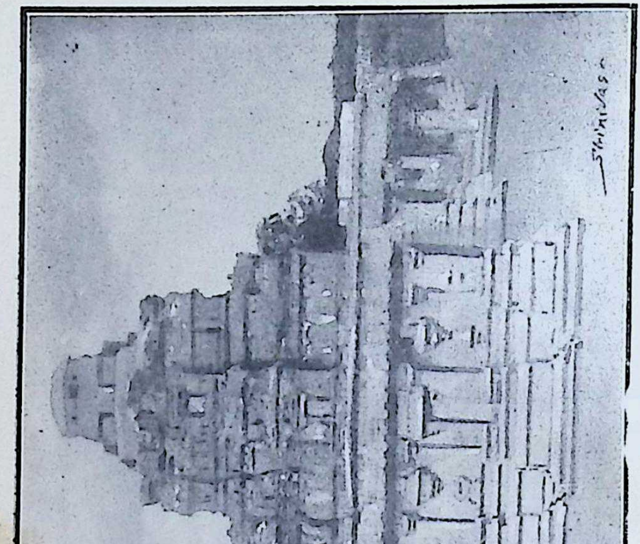

हजार रामस्वामी मंदिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RA

नागरिक

ईश्वरः— तुम कौन हो पूछनेवाले ?

[ईश्वर नागरिक की ओर एकाग्र दृष्टि से देखता है और नागरिक की आँख पानी से भर जाती हैं]

नागरिकः— अवश्य पूछूंगा । मैं कोई भी होऊं तो तुम्हें क्या ? पूछने का मुझे हक़ है । ज़रूर पूछूंगा । क्या इस हमारे देश के समान कोई और दूसरा देश है? यह है वेदों की मातृभूमि और यज्ञ-यागों का ख़ास घर । देवभाषा संस्कृत यहीं फूली फली । उत्तमोत्तम वेदांत मार्ग इसी देश में विकसित हुआ । परमेश्वर ने विविध अवतार लीलायें इसी देश में दिखलाईं । और मतमतांतरों का जन्म भी इसी भारतवर्ष में हुआ । सत्य में और धर्म में योग में और भोग में क्या कोई देश है जो इसकी बराबरी कर सके ? इस पुण्यभूमि में ऋषिवर्यों ने तपश्चर्या की और आचार्यों ने तत्वान्वेषण किया । कितने महापुरुषों ने अपनी महिमा यहाँ फैलाई और कितने भक्तजनों ने ईश्वर का नामसंकीर्तन किया ! यह कर्मभूमि है, इसी वास्ते यहाँ वीरपुरुषों का अवतार हुआ । अपने वैभव से उन्होंने देवेंद्र को भी हरा दिया । यहाँ पैदा हुए सम्राटों की बड़ी पंक्ति को देखो और यहाँ के चन्द्रवंशी और सूर्यवंशी राजा महाराजाओं को निहारो । सत्व में और धीरता में, शौर्य में और वीर्य में क्या है कोई देश हमारे देश के समान? और रुप-शील-गुण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपन्न सतियां भी क्या यहाँ थोडी हुई हैं ? एक ने सूर्य को रोका तो दूसरी ने यमराज पर विजय पायी और तीसरी ब्रह्म, विष्णु, महेश को अपने बच्चे बनाकर खेली। ऐसी है उनकी दिगन्त विस्तृत कीर्ति। अब भी कहो, है इस राष्ट्र के समान कोई दूसरा देश ? तुम कौन हो पुछनेवाले! क्या हास्यास्पद प्रश्न है तुह्मारा? इस राज्य को किसने स्थापित किया ? यहाँ धर्म की रक्षा कौन करता रहा? क्या हम चोर या डाकू हैं? हम उन यतिश्रेष्ठों और गुरुवरों की संतान हैं जिन्होंने शृंगेरी का महान् धर्मपीठ अलंकृत किया। व्यर्थ क्यों गर्जना करते हो? मैं केवल गर्जना से डरनेवाला नहीं हूँ।

ईश्वरः– मैं प्रसन्न हूँ बेटा। मैं महादेव हूँ और रक्षा करने के लिये आया हूँ।

नागरिकः– क्या तुम महादेव हो! यदि तुम सत्य ही महादेव हो तो क्या तुम में बाहुबल है? इस संहार---लीला में तुम आनंद लेते हो?

ईश्वरः– मुझे वरदान का सामर्थ्य है। जो चाहे सो मांग लो।

नागरिकः– मैं भीख मांगनेवाला नहीं हूँ। मेरी समझ में ईश्वर जैसी कोई वस्तु नहीं है।

ईश्वरः– मैं सच कहता हूँ कि ईश्वर है।

नागरिकः– हमारे देश में तो नहीं। कहीं बाहर चला गया है। इस भरतखंडसे वह भय के कारण भाग गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वरः— नहीं, वह भाग नहीं गया। ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखो।

नागरिकः—हाँ, हमने विश्वास किया और राज्य खो बैठे। जिस को तुम ईश्वर कहते हो वह सत्य और धर्म का पक्षपाती नहीं मालूम होता। उसने ढिंढोरा पीटा कि धर्मग्लानि के समय में मैं अवतार लूंगा और सब की रक्षा और सबका उद्धार करूंगा। फिर क्या अवतार हुआ उसका? क्या उसने आकर रक्षा की? यह मातृभूमि है इस विचार से क्या वह कुछ दुखी हुआ? धर्म और राज्य दोनों लूटे गये और वह यवनों के भय से डरपोक की तरह चुपचाप कहीं भाग गया। हम अब ईश्वर पर भरोसा कैसे रख सकते हैं?

ईश्वरः— न कोई मुझे जाननेवाले हैं और न कोई मुझसे बलवान्। लोग मेरे ऊपर भरोसा करना नहीं जानते, और जो करते हैं वे कभी धोखा नहीं खाते।

नागरिकः— हम क्योंकर ऐसा भरोसा करें? हमें आसरे की आवश्यकता भी क्या है? बाहुबल में विश्वास रखने से सबकुछ ठीक होगा। हम अनेक राज्यों की रचना और एकचक्राधिपत्य की स्थापना करेंगे। किसी से उपकृत होना हम नहीं चाहते। हमें उम्मीद है कि हम तुमसे भी उच्च ईश्वर का और उच्चतर नई सृष्टि का निर्माण करेंगे और विश्वामित्र ऋषि के समान प्रतिसृष्टि—रचना का साहस करेंगे। हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांध और मुह बंद करके बैठनेवाले हम नहीं हैं। अब तुम्हारी ज़रूरत ही नहीं। तुम अपने घर जाओ, वहाँ सुख से रहो और आराम से सो जाओ।

ईश्वरः– मैं आँखें मींच लूं तो क्या ये सप्तलोक बच सकते हैं? मैं नहीं जानता वह निद्रा या तंद्रा क्या चीज़ है। मुझे सुख बिल्कुल नहीं है। मैं हूँ सब जीवमात्र का कर्मसाक्षी।

नागरिकः– हाँ हाँ, मैं सब कुछ जानता हूँ। जब गो-माता की हत्या होती है तब तुम साक्षी होकर देखते हो?

ईश्वरः– जनन मरण तो जीवराशि के लिये स्वाभाविक बात है। उसमें छोटे बड़े का क्या हिसाब है? मैं तो सब में हूँ और सब के लिये समान हूँ। कालगति से धर्म की वृद्धि भी होती रहती है। यह आज्ञा है। इस का उल्लंघन कोई नहीं कर सकता।

नागरिकः– अभी हम इस निर्बंध को तोड़ डालेंगे।

ईश्वरः– हाँ तू तोड़ेगा। मैं भी देखूंगा।

[ईश्वर मुसकुराता है और चला जाता है]

नागरिकः– तुम्हें गोपाल क्यों कहें? इससे तो यही बेहतर है कि तुम्हें गो–हतक पुकारा जाय।

[सामने देखता है]

कहाँ गया पता नहीं। यह कौन था? बहुत बातें बनाता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग कहते हैं कि भूत और पिशाच अनेक वेष धारण कर सकते हैं। किसी पुजारी का मृतात्मा पागल बनकर अपने को ईश्वर कहता फिरता होगा। जीवन में अतृत रही हुई उसकी आशा मरण के पश्चात् शायद इस तरह व्यक्त होगी।

[यमराज का प्रवेश]

सामने कोई खड़ा है।

[नागरिक थोड़ा पीछे हट जाता है]

यमराजः– तुझे मालूम है कि मैं कौन हूँ ?

नागरिकः– जानता हूँ तुम कौन हो। तुझें धर्मदेव कहते हैं। तुह्मारी वह काली कलूटी काया, हाथ में का वह मृत्युदाई पाश और भुज पर वह बड़ी गदा कौन नहीं पहचानता ? तुम बिना दया--दाक्षिण्य के सब को दण्ड देते हो ? देवताओं में तुम बड़े हो। हे यमराज, मेरा साष्टांग प्रणाम स्विकार करो।

[नमस्कार करता है]

यमराजः– मैं तुझे नरक को ले जाने आया हूँ।

नागरिकः– मेरा क्या अपराध है महाराज ? मैं नरक से नहीं डरता। मैं आता हूँ चलो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमराजः– तेरा अपराध कहूँ ? तूने देव--द्रोह किया है । सच देखें तो ईश्वर निर्दोष है । चलो नरक को ।

नागरिकः— मेरे लिये– इस भरतखंड के निवासियों के लिये--नरक कुछ नई वस्तु नहीं है । तुम मुझे नरक का भय क्यों दिखलाते हो? इस संसार में हर घड़ी हमें नरकयातना होती है। जो लोग पारतंत्र्य पंक में सड़ रहे हैं वे क्या स्वर्गसुख चख रहे हैं? हमारी इस दुरवस्था का कारण परमात्मा ही है? वह अवश्य दोषी है। इस बात को सब लोग जानने हैं। परमात्मा हमारा है, बार बार यहाँ आकर उसने दर्शन दिया है, भक्तों की रक्षा की है, ऐसा डंका लोगों ने पीटा है। उस ईश्वर की प्रसन्नता के लिये सेतु–रामेश्वर से हिमाचल तक सुंदर मंदिरों की क़तार लगाई । वेदों में, शास्त्रों में और नाना पुराणों में उसी की स्तुति हुई । फिर इस सब का नतीजा क़्या हुआ? हम दूसरे के गुलाम हो गये । ईश्वर दोषों की खान है । पहले उसे पकड़ कर नरक में फेंकना चाहिये ।

यमराजः– इस प्रकार कहने का अधिकार तुझे नहीं है । चल मेरे साथ । वहाँ देख, वे तेरी राह देख रहे हैं ।

[यमदूतों को देखकर नागरिक घबड़ा जाता है]

वे महा वीरवर हैं । अभी तू उनका प्रताप नहीं जानता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिकः— यमराज, मुझे अपने दूत मत दिखाओ। मैं समझता हूँ कि वे बहुत करुणापूर्ण होंगे। यहाँ पर भी वीर पुरुष हैं। उन्हें तुम ने नहीं देखा होगा।

यमराजः—कहीं अंधेरे कूप में तुझे गाड़ दूंगा।

नागरिकः— अंधेरा तो हमारे लिये कुछ चीज़ ही नहीं। यहाँ पर भी चारों ओर फैला हुआ है। कहते हैं कि पाताल के गर्भ में काजल के पर्वत हैं। वहाँ अनेक यम और उनके दूत रहते हैं। सुना है कि वे पापियों को भयानक कूपों में डुबा डुबा कर बहुत पीड़ा देते हैं। हे यमराज! मुझे प्रत्यक्ष मृत्यु का और भयानक महाकाली का दर्शन हो चुका है। मैं अभी तुह्मारे साथ आ जाऊंगा। मेरे लिये यह देश ही नरक है और इसके मुकाबले में तुह्मारा नरक ही स्वर्ग है। डर से क्यों मरना? मैं कुछ आस्तिक नहीं हूँ कि वैसे डरूं।

यमराजः— आस्तिक और नास्तिक दोनों एक समान मेरे पास आकर पुण्य और पाप का भेद समझ लेते हैं। और अपने हिस्से का सुख और दुख भोग कर चले जाते हैं।

नागरिकः— मन में, स्मरण में और स्वप्न में भी बेचारे आस्तिक पुण्य-पापों से डरते हैं और तुम क्या उन पर दया करते हो? नहीं कदापि नहीं। डरपोक आदमियों को उन की छाया ही भूत बन कर सताती है। तुम उन पापभीरुओं पर ख़ूब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

हमला करते हो। मैं जानता हूँ तुम्हारा पौरुष कितना है। तुम वैदिकों को डराते हो, अबोध बच्चों को मार कर उनके माता-पिताओं को दुख देते हो, कोमल बालिकाओं का सौभाग्य हरण करते हो। तुम निष्करुण हो, निष्ठुर हो।

यमराजः– मैं धर्मज्ञ हूँ। नियम से और कर्म के अनुसार मैं दंड का विधान करता हूँ।

नागरिकः– धर्म की बातें क्यो करते हो? हम तो न पराक्रमी हैं और न पास के देश ही हमने जीत लिये हैं, न हिंसा की है और न किसीके ऊपर हमला। तो भी तुम हमें नरक में दबा मारते हो? गोहत्या करनेवालों ने राज्य छीन लिया और गोपूजा करनेवाले दास्य में बद्ध हो गये। तुम धर्म–मूर्ति कहलाते हो तो कहो इस सूक्ष्म मर्म का स्वरूप क्या है?

यमराज :– धर्म की गति अत्यन्त गहन है। जो दुख से संतप्त हैं वे उसे आसानी से नहीं समझ सकते।

नागरिकः– इस संताप का भी तो कारण ईश्वर ही है। झूठ बोलकर गायब हुआ, दुष्टों को सहायता दी, आर्यधर्म की निन्दा की और अन्य धर्म यहाँ लाया। उसे पहले घसीट लाना और नरक को भेज देना चाहिये।

यमराजः– वह तो असाध्य कार्य है, भाई।

नागरिकः– अब तुम्हें डरपोक न कहें तो और क्या कहें?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

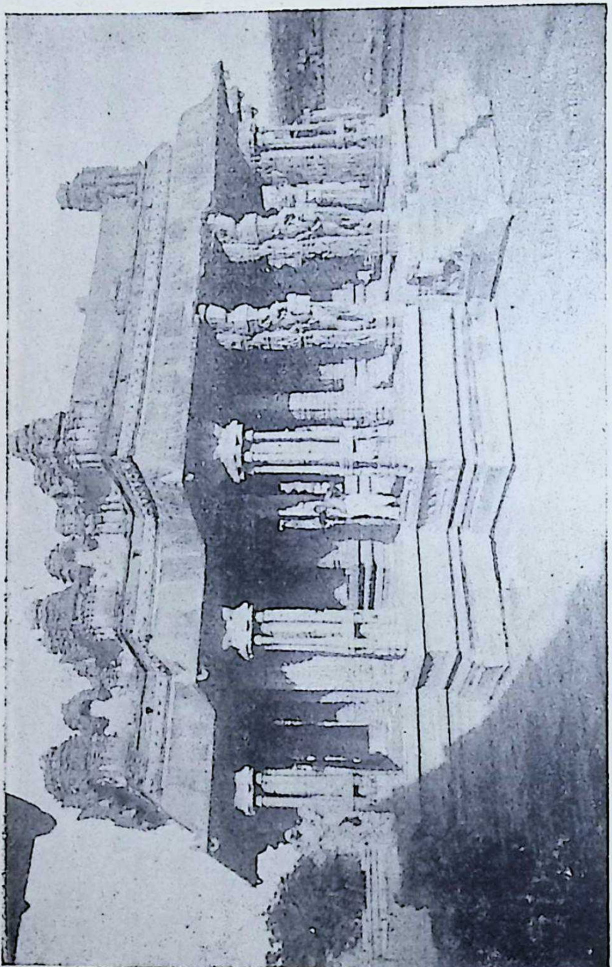

विजय विट्ठल स्वामी का मंदिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो असहाय और दुबले हैं उन पर तुम हुकूमत चलाते हो। हाथ जोड़नेवालों पर, फल-पुष्प अर्पण करनेवालों पर ही तुह्मारा अधिकार चलता है। और जो पापी हैं उनका नाम तक नहीं लेते हो और उनसे डरते हो! चौदह भुवनों के पापियों में भगवान ही अग्रगण्य है। वह बिल्कुल निर्भय और निरंकुश हो गया है, मनमानी करता है, स्वेच्छा से घूमता है। अनेक लोकनिर्माण करता है और उनका संहार भी कर डालता है मानों कोई बच्चों का खेल हो। उसका खेल होता होगा परन्तु हमारी जान जाती है। तुम धर्मराज हो और धर्म का पूर्ण ज्ञान भी तुह्में है। इस स्वेच्छाचारी को कुछ दण्ड नहीं दे सकते? इस बात पर कुछ ध्यान दोगे?

[यम चला जाता है]

हाय! हाय!! यमराज तो लौट गये। हे यमराज! अब मेरा बयान कौन सुनेगा? पाप-पुण्यों का हिसाब देख कर इन्साफ़ करनेवाले तुमने ही यदि नहीं सुना तो और कौन सुनेगा? अब क्या करूं? आजकल न यहाँ यज्ञ-यागादि कर्म होते हैं न देवताओं को हव्य कव्यादि कुछ पहुँचता है। वे भूखों मरते होंगे। अब उनमें न बल दिखाई देता है और न धैर्य न साहस। वे भय से भागते हैं और छूते ही मुरझाते हैं। बार बार ये अपने पितामह की दुआ मांगनेवाले अमरलोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

के निवासी और निस्तेज, निरुत्साही भारतवासी इन में कुछ अंतर नहीं रहा । ऐसे देवताओं का भजन पूजन करनेवाले शूर बीर कैसे बन सकेंगे।

[नागरिक चला जाता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य ५

[पंपा सरोवर के पास नागरिक का प्रवेश]

नागरिकः– इस सरोवर का पुण्य सोपान राभचंद्रजी के चरणरज से पावन हुआ है। उनके अश्रुजल से यह सरोवर पुनीत है मानों रघुराज का शोक ही इसने निगला है। इन चंचल जल-तरंगों में से 'हे प्रिय जानकी, हे मैथिली,' ऐसी मंद मंद आवाज़ धीरे से आती है।

[ग़ौर से सुनता है]

दूर से कुछ प्रतिध्वनि सी सुनाई देती है। शोक से गहरी सांस लेते हुये इन पहाड़ों से हे वैदेही, हे सीता! ऐसी ध्वनि निकल रही है। इन महान् वृक्षों की शाखाओं में इन पर्वतों की कंदराओं में सती सीतादेवी का शोक भरा है और उन में से 'हे राम, हे राम' ऐसा आर्तनाद निकल रहा है

[कुछ दूर पर तपमग्न ऋषि नज़र आते हैं]

ये तो ऋषिवर हैं और तपश्चर्या किया करते हैं। इन दिनों में तप करनेवाले ऋषि क्वचित् ही दिखाई देते हैं।

[ध्यानमग्न ऋषि सचेत होते हैं]

प्रणाम, ऋषिवर! बालक को आशीर्वाद दीजिये। आप का तपोभंग तो मुझसे नहीं हुआ न!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिः— तपस्या का भंग क्योंकर हो सकता है? तुझे यहाँ पर कौन लाया? यह स्थान तो बिल्कुल निर्जन है।

नागरिकः— मुझे कौन लाता? इस रमणीयता से आकर्षित होकर मैं यहाँ आ पहुँचा और आप का पुण्य दर्शन हुआ। मैं धन्य हूँ।

ऋषिः— जीते रहो बेटा। अभी कौन है इस लोक में?

नागरिकः— कौन है इस लोक में! अच्छा हुआ। क्या आप इस दुनिया को भूल गये?

ऋषिः— इस मनुष्यलोक की बात हम नहीं जानते।

नागरिकः— यहाँ आप क्या कर रहे हैं?

ऋषिः— परमात्मा के दर्शन की इच्छा से तपस्या और क्या?

नागरिकः— क्या ईश्वर नाम की कोई चीज़ है?

ऋषिः— वाह! है तो अवश्य। क्या तुम नहीं जानते?

नागरिकः— क्या आपने उसको देखा है?

ऋषिः— नहीं, किन्तु विश्वास है कि देखूंगा।

नागरिकः— तो क्या केवल इस श्रद्धा से आप तप करने लगे हैं?

ऋषिः— इतनी आतुरता किसी काम की नहीं। वह आतुर लोगों को दर्शन नहीं देता।

नागरिकः— हाँ हाँ हाँ, डर से वह कहीं छिपा होगा, इसी लिये तो नहीं आता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिः– जब सिद्धि प्राप्त होगी वह अवश्य दर्शन देगा।

नागरिकः– हे ऋषिवर! वह ईश्वर आप के साथ हंसी कर रहा है। आप विश्वास रखते हैं और तपस्या में समय ख़राब करते हैं। आपने यह तपस्या कब आरंभ की?

ऋषिः– दो युग बीत गये।

नागरिकः–और अभी तक ईश्वर के दर्शन नहीं हुए?

ऋषिः– होंगे, होंगे। इतनी जल्दी क्या है?

नागरिकः—अच्छा आशा रखो! एक बात पूछनी है। जब त्रेता-युग में रामचंद्रजी यहाँ होकर गये तब क्या आपने उनके दर्शन किये?

ऋषिः– हाँ, रामचंद्रजी तो भाई लक्ष्मण के साथ ऋष्यमूक पर थे। और वानरसेना की सहायता से उन्होंने दक्षिण पर हमला किया।

नागरिकः– उस दिन जब दुष्ट रावण ने सीता-माता को उठा लिया और आकाश में उड़ गया तो सुना है कि भय और दुख के मारे सीताजी ने रामनाम से नभोमंडल गुंजा दिया और बेशुमार आँसू बहाये। हे ऋषिश्रेष्ठ, क्या आपने वह दृश्य देखा?

ऋषिः– हाँ, अवश्य देखा।

नागरिकः– आपने देखा! और रावण को नहीं मारा? उस दुष्ट दशकंधर के सब सिर उड़ाकर यहाँ पर उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलि क्यों नहीं दी! क्यों उसको चीर फाड़ के यहाँ पर उसका खून नहीं बहाया?

ऋषि:— बेटा, युद्ध करना क्षत्रियों का काम और तपस्या ही हमारा धर्म।

नागरिकः— दयाशून्य इस तपस्या में आग क्यों नहीं लगा देते? जटायु जैसे एक पक्षी को करुणा आई। अपने पंखों से और चोंच से रावण से लड़ाई की। उस दैत्य के पापी शरीर से खूब रक्त बहाया। खुद अत्यंत घायल और क्षत-विक्षत होकर लहू की नदी में लेटे लेटे रामचंद्रजी को सब हाल सुना कर आखिरी सांस छोड़ी। यदि आप युद्ध नहीं कर सके तो क्यों शाप देना भी भूल गये? तब आप कहीं आड़ में गुफा में छिप गये!

ऋषि:— हँः क्या शाप देना चाहिये! बेटा, शाप देकर क्या तपस्या बिगाड़ लें?

नागरिकः— ऐसे आपके निकम्मे तप को कहीं चूल्हे में जाने दीजिये। राम ने उस पक्षी को बिना मांगे मुक्ति दी। बड़े दुख की बात है कि आप बिना कुछ समझे तपस्या किया करते हैं। यदि आप शाप से रावण को रोकते तो राम वहीं उसका संहार कर देते, तब क्या आपको रामचंद्रजी जो चाहे सो नहीं देते? भयमुक्त और रामयुक्त जानकी—माता भी 'मुझे आपने बचाया, आप ने ही मेरी रक्षा की' इन मधुर वाणियों से धन्यवाद न देतीं और कृतज्ञता से आप के चरणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर आँसू न ढालतीं। उस दिन क्या आप के हृदय में दया का स्रोत नहीं बहा? क्या आपने नहीं सोचा कि भूमाता की पुत्री इस तरह दुस्थिति में है? एक पीड़ित अबला का आर्त विलाप सुन कर आप की आँखों में पानी नहीं भर आया?.........

[ऋषि सिर हिलाते हैं]

नहीं, नहीं, एक बूंद भी नहीं टपकी। सूखे वृक्ष के समान सूखे शरीर से आँसुओं की आशा करना व्यर्थ है। पाषाण-हृदयी हैं आप!

ऋषिः— शोक मोह हमने छोड़ दिया है।

नागरिकः— छोड़ दिया है! छोड़ने से लाभ तो कुछ नहीं हुआ। आसानी से मुक्ति पाने का मौक़ा आया था, वह भी चला गया। दो युग बेकार बीत गये। आप मुक्ति चाहते हैं तो इस संसार में आइये, शोक मोह का अनुभव कीजिये और बेचारे पापी जनों का उद्धार कीजिये। इससे ईश्वर प्रसन्न होगा, यहाँ बैठे रहने से कुछ फ़ायदा नहीं। मातृभूमि की दयनीय दशा पर एक दृष्टि डालिये और करुणा से कर्मक्षेत्र में अग्रसर होइये।

ऋषिः— हम भारतभूमि को भूल गये हैं।

नागरिकः— हाय हाय! भूल गये? ज़रा इस भारत-धर्म की ओर करुणा से देखिये। यह धर्म है ऋषिप्रणीत और मनुमुनि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचलित किया हुआ। अब वह सब उलटा हो गया है। दूसरे किसी की नहीं तो इस धर्म की रक्षा तो आप को अवश्य करनी चाहिये। एक बार तो करुणापूर्ण दृष्टि से देखिये क्या हाल है! जहाँ तहाँ स्वार्थ बढ़ गया है और जिधर तिधर भेदभाव फैला है। सभी मानों अज्ञान-सागर में डूब गये हैं। न सत्यधर्म को समझते हैं और न अपनी अभिवृद्धि के नियमों को। आँखों के अंधे बन गये हैं। इनके मन वचन और कर्म में कुछ मेल ही नहीं रहा। जनता में न रीति दिखाई देती है और न नीति। धैर्य और साहस का तो, समझो, नामोनिशान भी नहीं रह गया है। क्षुद्र कीट की भांति इस दारिद्रता के कूप में लोग पैदा होते हैं और मर जाते हैं। भूतकाल में तो ये अतीव वैभवशाली थे। इन्होंने बड़े राज्य और साम्राज्य भी स्थापित किये और संतति संपात्ति से समृद्ध रहे। इतना ही नहीं इन्होंने और भी क्या किया वह सुनिये। देशदेशान्तरों को ज्ञानदान किया और धर्मतत्व समझाये। आज वे लोग ऐसी शोचानिय दशा में हैं कि सारी दुनिया उनको देख कर हंस रही है। शत्रुओं को मटियामेट करने की शक्ति आज उनमें नहीं रही। उच्च नीच कहलाते हुए वे स्वयं आपस में लड़ मर रहे हैं और आश्चर्य है कि वह भी धर्म के नाम पर! कोमल बालिका को विधवा बनाते हैं और धर्म के नाम से उसको वैराग्य का उपदेश देते हैं! दूल्हे को मोल ले लेते हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

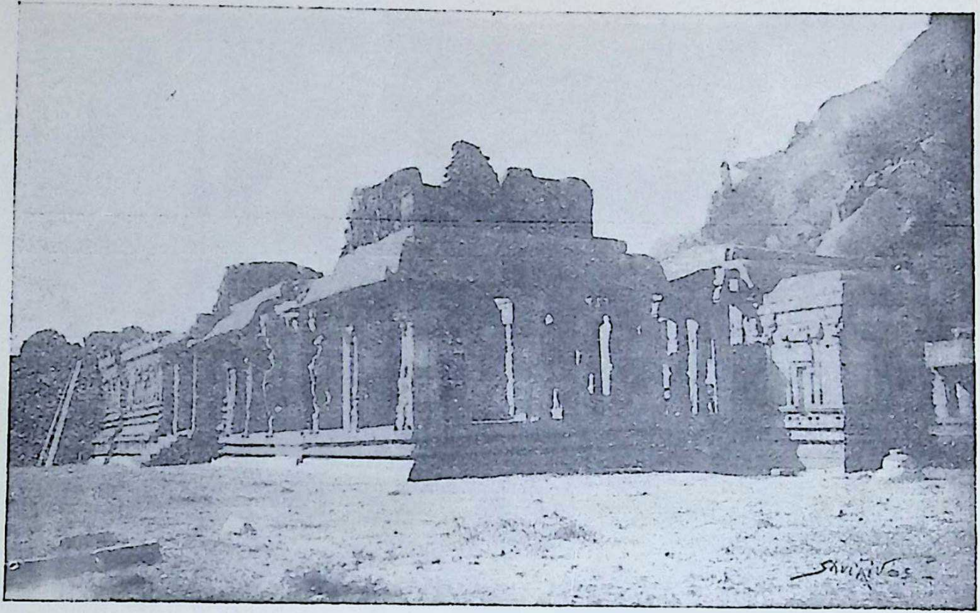

विजयविट्ठल स्वामी का कल्याण मंडप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं कि यह विवाह है ! कुमारियों को कहीं दूर ले जाकर बेच डालते हैं और अपने ग्राम में शास्त्र और मंत्र का शोर मचाते हैं ! और यह सब हो रहा है धर्म के नाम पर ! खुद परस्त्री को पाप की दृष्टि से देखते हैं और घर में बेचारी पत्नी से कहते हैं कि पतिव्रत--धर्म का पालन करो ! परमात्मा सब वस्तुओं में समानता से व्याप्त है, वह सब के लिये दयालु है, इन उच्च तत्वों का बयान करते हैं, पर आचरण में क्या है ? कुत्ते को नज़दीक आने देते हैं पर अपने कई भाइयों को पास नहीं आने देते। इतना ही नहीं, उनको दया--दृष्टि से भी नहीं देखते । यह सब पवित्र धर्म के नाम पर! कितने दुख की बात है? आज यह धर्म हमारे लिये मौत बना है। इस धर्म की जंजीर से हम बद्ध हो गये हैं। गला घोंटनेवाली इस जंजीर को तोड़नेवाला अभी कोई पैदा नहीं हुआ है। हमारे बंधनों को तोड़कर हमारी रक्षा करनेवाला नहीं आया है। ऋषिवर, आप एक बार दया करके देखिये और इस धरती पर सच्चे धर्म का प्रचार कीजिये।

ऋषिः-- ईश्वर चाहेगा तो सब कुछ करायेगा। यह कौन जान सकता है कि वह किस समय पर और किस रूप से आकर रक्षा करेगा? और यदि वह आया भी हो तो किसे पता है?

नागरिकः-- परमात्मा आयेगा क्या? क्या वह आगया होगा ? आहा! आया है न आप का भगवान! वहाँ गिरे हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

मंदिर में पूजा अर्चा स्वीकार करता हुआ चुपचाप बैठा है!

ऋषि:– क्या वह क़ैदी है कि पत्थर के घर में स्थिर होकर बैठा रहेगा? वह स्वतंत्र है।

नागरिक:– जब उसके हाथ पांव तोड़े गये तब तो शांति से सब कुछ उसने सह लिया।

ऋषि– पत्थर टूटा तो क्या ईश्वर नष्ट हो जायगा? कभी नहीं! एक मूर्ति की जगह दूसरी बनायेंगे। क्या हमारे देश में पत्थरों और कारीगरों की कमी है?

नागरिक:– यवन जब आये तब क्या आप के ईश्वर को बहुत अच्छा लगा? आप वर प्राप्ति की व्यर्थ आशा कर रहे हैं। वह तो चुपचाप एक कोने में पड़ा है।

ऋषि:– बेटा, यवन क्या पराये हैं! ईश्वर के लिये तो सब समान हैं। वह सब को समान और अपने पुत्र जैसे देखता है। सब लोगों में ईश्वरांश है और उसका आविर्भाव सब में दिखाई देता है। वह हर किसीको उसकी शक्ति के अनुसार बुद्धि और ज्ञान देता है।

नागरिक:– वैसा ईश्वर आप के लिए रहे। जो योगियों को पीड़ा देनेवाला और नारियों को चाहनेवाला ईश्वर आप ही के वास्ते रहे। एक दूसरा ईश्वर है जो हमें प्राप्त हुआ है।

ऋषि:– वह कौन दूसरा ईश्वर है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिकः— आप उसे लेकर क्या करेंगे? वह है हमारा बड़ा देव, महादेव, देवों का देव।

ऋषिः— हम पूछते हैं वह कौन है। बताओ तो सही!

नागरिकः— हम पर प्रसन्न हुए ईश्वर को जानने की क्या आप को सचमुच इच्छा है? तो सुनिये महाराज, तुमुल युद्ध के कोलाहल में जब जयभेरी की आवाज़ सुनाई पड़ती है, जब रणवाद्यों का निनाद दसों दिशाओं को गुंजा देता है, जयदुंदुभि की गगनभेदी ध्वनि स्वर्ग से जा टकराती है, रणवीरों के अट्टहास और खड्गों की खनखनाहट के साथ शत्रुओं के सिर आर्तनाद से आकाश में उछलकर विकट नृत्य करते हैं, लाल धूल चारों ओर फैल जाती है और लाल पानी जिधर तिधर बहने लगता है तब आता है वह हमारा ईश्वर, दर्शन देता है ऊपर आस्मान में आदिशक्ति का नाथ-वह महाकाली का अधिनाथ-नयनों से अग्निस्फुलिंग बखेरता और शत्रुसेना को जलाता। वह रुंडमाला-धर प्रत्यक्ष होता है, संयायता देता है और जयप्राप्ति का मार्ग बता कर अपनी महिमा बढ़ाता है।

ऋषिः— हम समझते हैं, तुह्मारा कहना रहने दो। अच्छा, व्यर्थ बातों के झगड़े से क्या काम। जो कुछ होना है वह हो जायगा, रुक नहीं सकता। देव संकल्प गुप्तगामी है। कभी कभी प्रकट होता है फिर अदृश्य हो जाता है। विधिलिखित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्ग से ही और रीति से ही सब कुछ कार्य होगा। ईश्वर चाहता है तो क्षण भर में निर्माण कर सकता है और नाश भी। बिना उसकी इच्छा के एक पत्ता भी नहीं हिल सकता तो हमें सिवा उसके क्या आसरा है ?

नागरिकः– बहुत समय तक तपस्या करते बैठे रहने से आप जड़-भरतसे हो गये हैं और बामी के समान विषैले सर्प का घर बनने के लायक हो गये हैं। क्या बात करते हैं ? आप को दुनिया का कुछ संपर्क नहीं और वहाँ क्या हो रहा है इस की कुछ सुध नहीं। आप का शोक सूख गया है, मोह नष्ट हुआ है, कोप लुप्त हुआ है और आप में संताप का तो नाम भी नहीं रहा। आप क्या कह रहे हैं ? आपको दुनिया का क्या पता है ? पर माधवाचार्य ने राज्य की और साम्राज्य की स्थापना की। उन्होंने कीर्ति भी पाई और मुक्ति भी। आपने क्या प्राप्त किया बतलाइये। जप-तप करते हुए कोने में बैठकर एक हाथ लंबी दाढ़ी मात्र पाई आपने।

[ऋषि क्रोध से जलने लगते हैं]

ऋषिः–मैं अभी तुझे शाप दे दूंगा।

नागरिकः– ऋषि महाराज ! सीतादेवी को जिसने चुराया उस दैत्य को शाप देना आप छोड़ बैटे, फिर अभी शाप का नाम मुंह से मत निकालिये। और शाप भी तो आप क्या देंगे ? मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

पत्थर बन जाओ यदि शाप देंगे तो हाँ, मैं एक गोल पत्थर बन जाऊंगा और शत्रु का सिर फोड़ दूंगा। आप शाप देकर मुझे राक्षस बनायेंगे तो मैं राक्षस ही हूँ। शत्रुओं का गला घोंट के भूमाता का भार उतार दूंगा। बताइये आप क्या शाप देंगे। क्या मृत्यु का शाप देंगे? मैं मर भी जाऊंगा पर मरनेवाले फिर जन्मते नहीं? मरुंगा और फिर पैदा होकर मातृभूमि की सेवा करुंगा। मैं इस जप–तप में समय कभी नहीं गंवाऊंगा। मुक्ति के लिए मैं लालयित नहीं हूँ!

ऋषिः– यह तो कुछ नयी रीतिसी है। क्रोध और संताप से इसका मन क्षुब्ध हो गया है। गहरे कीचड़ में फंसे हुए हाथी के समान इसकी आत्मा अत्यन्त आकुलता से चिल्ला रही है। यह ईश्वर को और धर्म को व्यर्थ दोष दे रहा है। विजय-नगर के राज्यावशेष और राम सीता के कुछ दिन का पवित्र स्थान आने–जानेवालों की राह पर हैं। यात्री देख कर दुखी होते हैं, विकल हो जाते हैं और मुक्तकंठ से विलाप करने लगते हैं।

नागरिकः– यदि आप मानव हों तो हमारे हृदय की पीड़ा समझेंगे। नहीं, नहीं, आप मानव नहीं, आप चेतनाहीन हैं। हमें ऐसे क्यों चिढ़ाते हैं।

ऋषिः– बेटा, जाओ। कल तक तुह्मारा दुख शांत हो जायगा। राज्य की और धर्म की रक्षा जिस महापुरुष ने की उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदेव का दर्शन होगा। वे तुम्हें ज्ञान देंगे।

नागरिकः– क्या कहते हैं महाराज? क्या यह संताप शांत होगा? इस शरीर के नाश के साथ ही यह कष्ट नष्ट होगा। हमारे अन्तःकरण की जलन ये योगी क्या जान सकते हैं? सूखे पत्ते खाते खाते इनके हृदय भी सूख गये हैं। पत्थरों के बीच में बैठ बैठकर ये पाषाण हृदयी बन गये हैं। दुनिया को भूल गये हैं। और यहाँ कर रहे हैं ब्रह्मचिंतन ये सार-हीन लोग।

[नागरिक चला जाता है]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य ६

[तुंगभद्रा के तीर पर नागरिक का प्रवेश]

नागरिकः— वे कौन हैं? गेरुए कपड़े पहने हुए हैं। इधर उधर देखते हुए चल रहे हैं। कई मुकुटधारी राजा आकर उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम करके चले गये। यहाँ पर गोचर हुए और फिर गुप्त हो गये। इसी ओर चले गये। कौन जाने कि इस स्थान को कौन कौन अपने चरण--रज से पुनीत करते हैं। यहाँ योगियों की गुफायें हैं और ऋषि मुनियों के बहुत से आश्रम भी।

[खोज करता फिरता है]

[विद्यारण्यजी का प्रवेश]

विद्यारण्यः— क्यों ? आज मन में इतना दुख क्यों जान पड़ता है? अच्युतादि राजा महाराजा तो प्रणाम करके चले गये। विधिका संकल्प क्या है कौन जाने।

[पुजारी आता है]

पुजारीः— बहुत बेचैन हूँ गुरुदेव ! बहुत बेचैन हूँ।

[प्रणाम करता है]

विद्यारण्यः— हे आर्य, इस मनस्ताप का कारण क्या है ? उठो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

[हाथ पकड़ कर उठाते हैं]

पुजारीः– क्या कहूं गुरुदेव ! गुरुदेव !

विद्यारण्यः– शोक नहीं करना । ईश्वर सब कुछ ठीक ही करेगा ।

पुजारीः– गुरुदेवजी क्या पूछते हैं? मुझे दुख क्यों न हो ? आजकल अत्यंत दुष्टकाल आ गया है। धर्म नष्ट हो गया है, मेरी आयु की समाप्ति के पूर्व ही मुझे चिर--निद्रा लग जाय । इस पापमय जविन में ·क्या धरा है ? न सार है न सार्थकता ।

विद्यारण्यः– इतने अधीर मत होओ । कुछ धीरज धरो ।

पुजारीः--- दुखी न होऊं तो क्या करूं ? आप ही बताइये गुरुदेव! धरती पर नास्तिक ही नास्तिक फैले हुए हैं। वे ईश्वर को नहीं मानते। न उनमें भय है न भक्ति। परमात्मा से मैंने प्रार्थना की तो वे मौनसे हैं, न मेरी प्रार्थना सुनी न जवाब दिया। धर्म तो मानों सप्तपाताल से भी नीचे कहीं उतर गया है। क्या करूं गुरुदेव, मैंने ईश्वर की पूजा की, अर्चा की, भजन किया, युगयुगांतरों से सेवा तो चली ही आ रही है। कभी मैंने किसी अनाचार को अवकाश नहीं दिया । तो भी परमात्मा को दया नहीं आई

विद्यारण्यः– आर्य, तुम हृदय की जलन से ऐसा कहते हो। इस प्रकार ईश्वर को दोष देना क्या धर्म है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

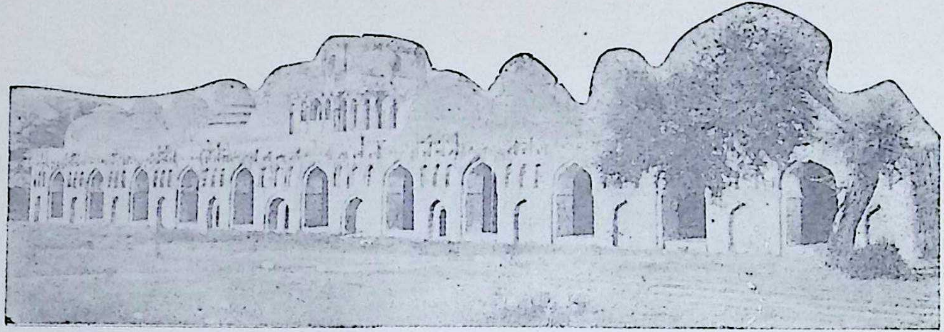

गजशाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुजारीः– फिर मैं क्या करूं? आज एक नास्तिक आया और उसने जगदीश्वर को, पंपाधिनाथ को दुष्ट बातों से भ्रष्ट किया। उसने परमात्मा की जो तौहीन की उसकी हद न थी। वह बोला यह तो केवल पत्थर की एक मूर्ति है, इसमें महिमा कहाँ से आ सकती है। झूठी कथायें रची गई हैं, सब पेट भरने के लिये स्वांग हैं। सिर्फ़ इतना ही नहीं उसने तीर्थ प्रसाद तक न लिया और वैसे ही चला गया। मेरी आँखों के सामने यह सब कुछ हुआ तो कहिये गुरुजी क्या दुख नहीं होगा?

विद्यारण्यः– हे अर्चकवर, कोई दुर्जन होते हैं और कोई सज्जन। जीव-मात्र अपने कर्म से बद्ध हैं। उनके पुण्य-पापों की गणना करनेवाला भी तो कोई दूसरा है। हे आर्य, दुखी मत होओ।

पुजारीः– ये नास्तिक खुद बिगड़ गये हैं और दुनिया को भी बिगाड़ रहे हैं। उनके लिये न कोई नियम है न बंधन। ऐसा ही होता रहा तो क्या धर्म बच सकता है? क्या इस दुनिया की हालत सही–सलामत रह सकती है?

विद्यारण्यः– मालूम होता है कि लोगों का मन छिद गया है। हृदय दुख से भर गया है।

पुजारीः– हे गुरुदेव, क्या आप धर्म की रक्षा न करते हुए ऐसे ही हाथ पर हाथ धरे चुपचाप देखते बैठे रहेंगे?

विद्यारण्यः– भाई, धर्म की रक्षा अवश्य करूंगा। मत समझो कि धर्मवृक्ष सूख गया है। काल–गति के अनुसार धर्म अवश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिवृद्धि को प्राप्त होगा। भूतकाल में उन दिनों का धर्म हितकारक था। फिर इन दिनों उसमें कुछ दोष प्रतीत होते हैं। युगधर्म नहीं जानने से बहुत हानि होगी।

[नागरिक का प्रवेश]

नागरिक:— कुछ दिनों तक यह धर्म--कर्म सब दूर रहें। इस त्रिलोक में ऐसी कोई बात भी नहीं जो मनुष्य के लिये असंभव हो। शक्ति से और युक्ति से नर काम करे तो नारायण बन सकता है। और यदि अज्ञान और निर्बलता से आक्रान्त हो तो एक सामान्य पामर ही रह जाता है। इस मानव शरीर में ब्रह्मा विष्णु और महेश के अंश हैं और वेही हमें देवत्व प्राप्त करा सकते हैं। विधिलिखित जो है, जिसे प्रारब्ध कहते हैं उसको हम बाहुबल से--अपने पराक्रम से--मिटा देंगे और नया भविष्य लिखेंगे। यही है वीरों का मार्ग और यही है शूरों की प्रतिज्ञा। आँखों से आँसू क्यों बहाना और दुख से व्यर्थ क्यों मुरझाना? हमारे पूर्वजों ने इस हंपी में राज्य की स्थापना की थी और विधर्म का हमला भी रोका था। डर से क्यों जीना और रोते हुए क्यों हाथ फैलाना? हमारा जीवन सौ बरस का भी हो किन्तु यदि वह दीन हीन हो तो किस काम का? एक क्षण का भी जीवन हो किन्तु वह साहसी और सामर्थ्यपूर्ण हो। मृत्यु में ही है शांति का सुख और साहस में ही है सुयश का बीज। इस दुनिया में मान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही जान है, उस की रक्षा ही जीवन का कर्यव्य है। संपत्तियों में मान ही सर्वश्रेष्ठ है और जो मान के साथ है वही जीता है।

[नागरिक सामने देखता है]

पुजारी:— यहाँ पर यह नास्तिक क्यों आ पहुँचा? हे गुरुदेव, यही पापी है जिसने ईश्वर को भलाबुरा कहा।

नागरिक;— हे गुरुदेव! हे गुरुवर!

[विद्यारण्यजी के चरणों पर आ गिरता है]

विद्यारण्य:— बेचारा दुख से भरा है। हाय! यह तो बेहोश हो गया

[पुजारी से]

महाशय, इसको होश में लाने का उपाय करो।

पुजारी:— क्या नास्तिक का स्पर्श! उसकी सेवा! अच्छा, गुरुदेव जी आपकी आज्ञा!

[हिचकिचाता हुआ उसको संभालता है]

विद्यारण्य:— पुजारी महाशय, आस्तिकों और नास्तिकों का भेद एक ओर रहने दो। शरणागतों की रक्षा ही सब से श्रेष्ठ धर्म है। जो बेहोश हो गया है उसे क्या दोष देना धर्म कहला सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुजारीः— क्षमा करें गुरुदेव । मुझसे बड़ी भूल हुई ।

[नागरिक को कुछ उपचार करता है । विद्यारण्यजी अपने हाथ से नागरिक को उठाते हैं]

विद्यारण्यः— ईश्वर करुणानिधि है । वह सब ठीक ही करेगा ।

नागरिकः— गुरुदेव, आपके चरणकमलों के दिव्य दर्शन से मैं कृतार्थ हुआ । मैं आपका पवित्र पदरज सिर पर लेता हूं । दुनिया की आमजनता कहती थी कि आप जड़देह त्याग कर यहाँ से चले गये । क्या आप फिर आगये हैं ? क्या आप यहाँ पर ठहर जायंगे ? क्या आप फिर इन लोंगों में वीरता-साहस का संचार करायेंगे ? आप करुणा के अवतार हैं । आप आये हैं तो गुरुदेव, इस जनता की रक्षा कीजिये ।

विद्यारण्यः— मैं इसी लोक में हूँ । योगसाधन में मग्न हूँ । मुझे मृत्यु स्पर्श नही कर सकती ।

नागरिकः— गुरुदेव, अंधकार में भय से रोते हुए बालकों को ज्ञानज्योति दिखा कर आपने शांत और समर्थ बनाया । डर से सूखे हुए हृदयों में धैर्य का नवजीवन भरकर आपने नई चैतन्यशक्ति दी । गुरुदेवजी, आपेने हेमंत के हिम से निस्तेज और निरस हुए पेड़-पौधों में वसंत के समान नवपल्लवों और फूलों की वहार दिखलाई । मैं क्या कहूं गुरुदेव ? मैं इस दुर्बलवाणी से कहाँ तक वर्णन करूं ? आपने ही इस निर्जीव राष्ट्र के शरीर में अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संजीवनी शक्ति से जान डाली और इन लोगों के हाथों से उज्वल कार्य कराये।

विद्यारण्यः— जहाँ और जिस समय कार्य उपस्थित हो वह पूरा करना चाहिये। व्यर्थ शोक करने से क्या लाभ? गत वैभव के स्मरण से आज दुखी होना और उस दुख में ही पड़ा रहना मूर्खता है। आता है, होता है, और जाता है, कर्म का चक्र हमेशा चलता रहा है और चलता रहेगा। पूर्व वैभव का स्मरण भावी समृद्धि की नींव हो सकती है। उससे उतना ही काम लेना चाहिये।

पुजारी— ओहो, यह कैसा आश्चर्य है! यह तो बड़ा गुरुभक्त दिखाई पड़ता है। मालूम नहीं होता कि यह आस्तिक है या नास्तिक। नया ही ढंग है।

नागरिकः— वह विजयी और वैभवशाली विजयनगर का साम्राज्य जिसको आपने स्वयं निर्माण किया और जिस की रक्षा आपने स्वयं की, वह आज जिंदा नहीं रहा, इससे जो शोक मुझे हो रहा है वह कैसे शांत होगा?

विद्यारण्यः— बेटा, किसीने निर्माण किया तो क्या? वह ईशसंकल्प है। क्या रामराज्य नष्ट नहीं हुआ? धर्मराज्य नष्ट नहीं हुआ? फिर दूसरे राज्यों का तो कहना ही क्या?

नागरिकः— आपने ममत्व को त्याग दिया है। इसी कारण से आप इस बात को इतनी आसानी से कह सकते हैं। ईश्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या वस्तु है और किसे उसका संकल्प कहते हैं यह मेरी समझ में कुछ नहीं आता।

विद्यारण्यः– बेटा, जन्म और मृत्यु जैसे जीवों के पीछे लगे हैं वैसे ही राज्य-रियासतों के पीछे भी पड़े हैं। मैं चिंता क्यों करूं? काल के विशाल पथ में कितने राज्य और साम्राज्य बनते और बिगड़ते हैं इसकी गिनती कौन कर सकता है? वे राज्य अपने अपने नियत काल में अस्तित्व में आते हैं, संकल्पित कार्य करते हैं और नष्ट हो जाते हैं। पर इसमें संदेह नहीं कि ईश्वराज्ञानुसार यह दुनिया आगे बढ़ रही है। मनुष्य इस अनादि अनन्त चित्रपट का बहुत ही थोड़ासा भाग देख सकता है। तो बेटा, शोक व्यर्थ है। जैसे व्यक्ति वैसे ही समाज और राष्ट्र भी जब नीति के मार्ग से च्युत होता है तब दुर्गति को प्राप्त होता है। यह ध्रुव, सत्य है।

नागरिकः– यों है तो हे गुरुवर्य, क्या हमारे उद्धार का कोई उपाय नहीं है?

विद्यारण्यः– उपाय है और परमात्मा की कृपा भी है। सारे विश्व के साथ हमारी मैत्री हो जायगी और हम फिर नया राज्य स्थापित करेंगे।

नागरिकः– तो क्या हम धीरज रक्खें?

विद्यारण्यः– हाँ, क्यों नहीं? भविष्य में हमारा गौरव कई गुना बढ़ जायगा। ऐसा ही ईशसंकेत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिकः– जो बीत गया वह आपने देखा है और जो आगे होगा वह भी देखने का सामर्थ्य आप को है। हम तो अल्पायु हैं। इच्छा है कि इस दृष्टि से मैं वह प्राचीन समृद्ध साम्राज्य का वैभव एक बार देख लूं। आपकी करुणा हो तो यह इच्छा पूरी हो सकती है। वर्णन तो सुना है और वह सुंदर शब्दचित्र भी अन्तश्चक्षु के सामने खड़ा है। परन्तु प्रत्यक्ष देखने का सौभाग्य अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। भगवान्! मेरी विनीत विनती है कि अभी कुछ कृपा कीजिये।

विद्यारण्यः– तुम गतवैभव के दर्शन के लिये उत्सुक हो किन्तु उस के दर्शन से तुह्मारा दुख दूना हो जायगा।

नागरिकः–कुछ भी हो एक बार देखना चाहता हूँ।

विद्यारण्यः– बेटा, शोक से तुह्मारी बुद्धि भ्रांतसी हो जायगी तो क्या तुम चाहते हो?

नागरिकः– हाँ अवश्य चाहता हूँ। गुरुदेव, साम्राज्यवैभव का दृश्य मैं देखना चाहता हूँ। क्या कोई ऐसा हतभागी कर्नाटकी या भारतवासी है जो नहीं चाहेगा? कृपा कीजिये। वह दृश्य देखने के लिये चित्त बहुत ही आतुर है। अभी तो यहाँ पर केवल यह भूमि, इधर उधर पहाड़ और टीले, जहाँ तहाँ मंदिरों के भग्नावशेष, और एक विस्तीर्ण जीर्ण-शीर्ण निर्जन नगर इतनी चीज़ें नज़र आती हैं। इनके अलावा और कुछ भी दिखाई नहीं देता। पहले यहाँ कितने घर होंगे और कितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी बस्ती होगी? वह महलों की सुंदर क़तार, वे विशाल और लोगों से पूरे भरे सजीव राजमार्ग, जनता के उत्साही जीवन के चिन्ह की फहराती हुई अनेक ध्वजा-पताकायें, जन-संकीर्ण नगर से उठनेवाले उस कोलाहल की गहरी गूंज, अधिक क्या कहूँ, आप के प्रयत्नों से बसा हुआ और आप की कृपा से बढ़ा हुआ साम्राज्यलक्ष्मी के मुखकमलका सा सौभाग्यपूर्ण विजयनगर मुझे एक बार तो अवश्य दिखा दीजिये। महाराज, मंदिरों में और भचनालयों में मंगलमय ईश्वर मूर्तियों की सेवा कैसे होती थी, वे देव पूजा-अर्चा स्वीकार करके अपनी कृपा से राज्य की रक्षा कैसे करते थे वह मुझे बताइये। वह हाथियों का झुंड, वे विजयरथ और वे युद्धोत्सुक घोड़े जब अपनी अपनी आवाज़ से आकाश गुंजा देते और सिंहनाद करनेवाले रणकुशल धीर वीर जब युद्धकुंड में आत्माहुति देने को तैयार हो जाते थे, तब का वह दृश्य भी मुझे दिखाइये गुरुदेव। और वह भी दिखाइये कि जब देशविदेशों के राजा-महाराजाओं सामन्त-मांडलिकों की भीड़ नज़राने लेकर, हाथ जोड़ कर उस रत्न सिंहासन की सेवा में सम्राट की कृपादृष्टि की अपेक्षा करते हुए खड़ी रहती थी।

विद्यारण्यः— वह दैवी संकल्प था, बेटा! वह दैवी संकल्प था।

नागरिकः— क्यों महाराज, आप का कंठ शोक से इतना रुंध क्यों गया? आप तो राग द्वेषादि द्वंद्वों से मुक्त हैं, आपको यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

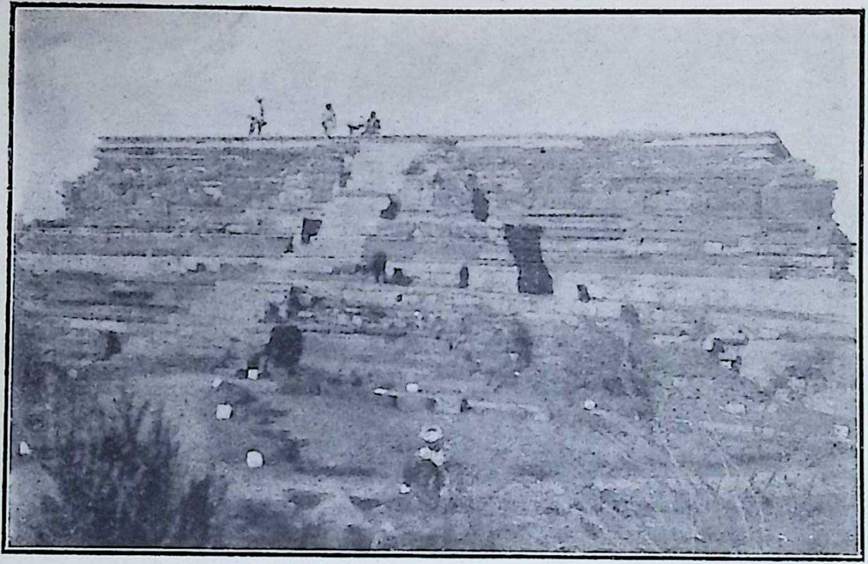

महानवमी की पहाड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुंध क्यों गया ? आप तो रागद्वेषादि द्वंदों से मुक्त हैं, आपको यह दुख का स्पर्श क्यों हो रहा है ? पूर्व वैभव के स्मरण से पत्थर भी पिघल जायगा, फिर मानवहृदय की दशा क्या होगी यह समझ लीजिये ! शोकाग्नि क्यों नहीं प्रदीप्त होगी ? ममता से पूर्ण मुक्त तो कोई भी नहीं हुआ, फिर चाहे वह यतिवर या योगी श्रेष्ठ ही क्यों न हों, सभी उससे बद्ध हैं। जब उनकी ही अवस्था ऐसी है तो हमारी क्या होनी चाहिये यह समझ लीजिये।

विद्यारण्यः– मैं सब से अलिप्त हूँ बेटा। दैवी संकल्प के मुक़ाबले में कौन ठहर सकता है ? और यदि ठहरा भी तो उस झगड़े में विजय की क्या आशा है ?

नागरिकः– हे करुणाकर, कृपा कीजिये महाराज।

विद्यारण्यः– उस दृश्य से क्या लाभ होगा, बेटा ? उसे भूल जाना ही ठीक है।

नागरिकः– हे पूज्य गुरुवर, कृपा कीजिये। पूर्व वैभव की पुण्य-स्मृति से हमें लगा हुआ तमोगुण उड़ जायेगा, राजस शक्ति जाग्रत होगी और रोषाग्नि प्रदीप्त होगी। इसी कारण मैं प्रार्थना करता हूँ गुरुदेव।

[महानवमी की पहाड़ी पर दरबार-अनेक राजा-महाराजाओं के प्रतिनिधि आते हैं, जाते हैं । रणवास, राजमंदिर, लोगों की भीड़, उत्सव और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

समारंभ हो रहे हैं यह दृश्य नागरिक देखता है। पश्चात् देवीमंदिर में तिरुमलांबा कुछ प्रार्थना कर रही हैं ऐसा दृश्य दिखाई देता है]

विद्यारण्यः– वीरवर रामराज रणांगण को गया है। उस समय उसकी धर्मपत्नी तिरुमलांबा देवी की पूजा करने के लिये आई है। वह प्रार्थना करती है कि विजयलक्ष्मी मेरे पतिदेव के गले में जयमाला डाले। रात को सती ने कुछ दुःस्वप्न देखा......अचानक आस्मान से भयानक आवाज़ आई, तोतों का समूह एकदम चिल्लाकर कांपने लगा और एक फलों से लदे हुए सुंदर वृक्ष पर वज्रपात हुआ, उससे वह वृक्ष जल कर धराशायी हो गया। इस स्वप्न से उद्विग्न हो कर सती कांपती कांपती देवी से निवेदन करती है कि कुछ अमंगल न हो, सब मंगल ही मंगल होवे।

नागरिकः– हा देवी !

[युद्ध में प्रचंड सैन्य का दृश्य—समरभूमि]

आशीर्वाद दीजिये गुरुदेव, आशीर्वाद दीजिये। वे मेरा रास्ता देख रहे हैं।

[अंजलिबद्ध होकर वीरप्रणाम करता है और वहाँ से चलता है]

हाँ, यह देखो मैं आया, मैं आ रहा हूँ। मुझे एक शस्त्र दो। आज के दिन मृतात्माओं से यमलोक भर जाने दो। आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत्रुसैन्य को काटकर टुकड़े टुकड़े कर देंगे, गरमागरम खून से रंग खेलेंगे और शाखिनी डाकिनियों को आमंत्रण देंगे ! भाई, धर्मनिष्ठ होकर लड़ो। मातृभूमि की सेवा सब से श्रेष्ठ धर्म है। दुश्मनों के सिर गेंद से उड़ाकर आकाशमंडल भर देना चाहिये और आज समुद्रको भी लहू से लाल कर देना चाहिये। जान की फ़िक्र छोड़ कर लड़ना चाहिये। यह युद्ध है हमारे सपूतों को पारतंत्र्य के बंधन से बचानेके लिये, यह युद्ध है मंदिरों की पवित्रता कायम रखने के लिए संहार करते करते लड़ना चाहिये। यदि जयप्राप्ति हो तो है इस भूमि का भोग, और यदि मरणप्राप्ति हो तो भी है दिव्य स्वर्ग का भोग। पीछे एक क़दम भी मत हटो। यदि तुम भाग जाओगे तो क्या कभी जयश्री प्रसन्न होगी? नहीं, नहीं। वह तुह्मारा तिरस्कार करेगी और तुह्मारी भूमाता शोक से पागल बन जाएगी। यदि तुम अपने को और अपने बालबच्चों को दास्यशृंखला से बांधना चाहते हो तो भागो, नहीं तो लड़ो वीरों की भांति लड़ो। जो मातृघाती और मातृद्रोही है और जो नरकवास चाहता है वही यहाँसे डरपोकसा भागेगा। इस वीरों की सेनामें क्या कोई जान से प्यार करनेवाला निकम्मा यहाँ है? लड़ो, आगे बढ़ो, काटो, वैरियों के बीच में कूदो, उन्हें मारो और जयवधू को खींचकर वीर रामराज के चरणों में अर्पण करो। चलो, क्या देख रहे हो, बोलो, जयकाली, महाकाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

[नागरिक चला जाता है। सैन्य का दृश्य अगोचर होता है]

पुजारी:– हाय! हाय! बिल्कुल पागल हो गया है। चला गया गुरुदेव, क्या इसका पागलपन दूर हो सकता है? मुझे तो उसकी हालत पर बहुत दुख होता है।

विद्यारण्य:– हाँ, पागलपन भी कई तरह का होता है। कोई दूर हो जाता है और कोई नहीं।

[नागरिक फिर आता है]

नागरिक:– कहाँ हैं? वे वीर कहाँ गये? समर कोलाहल से प्रक्षुब्द होकर आवेश से रणकुंड में कूदनेवाले वे वीर कहाँ हैं?

विद्यारण्य:– वे अब यहाँ कैसे रह सकते हैं? उसी दिन वे स्वर्ग को जा पहुँचे।

नागरिक:– मैं भी उनके साथ चला जाऊंगा। मैं अब मरना ही चाहता हूँ। यह जीना बेकार है। क्या हम डरपोक हैं?

विद्यारण्य:– भाई, यहाँ कौन है? मैंने तो तुम्हें केवल एक दृश्य दिखाया। कहीं मत जाओ, समझे? व्यर्थ शोक मत करो।

नागरिक:– गुरुदेव, क्या वह केवल माया थी? क्या आपने मुझे शून्य में साम्राज्य का वैभव दिखाया? अहा! क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सुखस्वप्न था कि जिसके स्मरण से मैं अब दुखी हो रहा हूँ ! मैं कुछ मोहित हो गया, मैं एक ज्ञानरहित पशु जैसा हो गया।

विद्यारण्यः— भाई, सब ऐहिक राज्यसंपत्ति की यही हालत है, वह माया से निर्माण होती है और उसींमें लीन होती है। वह माया एक मात्र परमात्मा के स्वाधीन है।

नागरिकः— क्या हमारा देश नष्ट हो गया ?

विद्यारण्यः— नहीं, बेटा, इतना मत घबराओ। तुह्मारा देश है और तुम भी हो। भविष्यकाल में इस देश का वैभव बहुत भारी होगा। ईशसंकल्प वैसा है। यह भारतवर्ष का भविष्य है, इसमें कुछ झूठ नहीं होगा। इस पवित्र भारतभूमि में अनेक वीररत्न पैदा होंगे और राज्य–साम्राज्यों की स्थापना करेंगे।

[नागरिक निःशब्द हो जाता है]

अभी क्यों दुखी हो भाई ? दुनिया में जो अच्छे और श्रेष्ठ लोग हैं वे इकठे हुए हैं। चारों ओर मित्रता स्थापित करने का संकल्प है—नये प्रकार का राज्य स्थापन करने का संकल्प है। काल–गति के अनुसार और युगधर्म के अनुरोध से राष्ट्र की प्रगति अवश्य होगी। वैभव के दिन आ रहे हैं।

नागरिकः— हम सब पापी हैं। हम दोषों से पूर्ण हैं। गुरुदेव, हम पर परमात्मा प्रसन्न होगा ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरिक

विद्यारण्यः– बेटा, तुह्मारा पाप सब जल जायगा और तुम शुद्ध सुवर्ण की भांति हो जाओगे। आर्य-धर्म का तेज अधिक उज्वल होगा। यहाँ धर्मज्ञ जमेंगे और उत्तम धर्मोपदेशक तुह्में श्रेष्ठ धर्म का सच्चा मार्ग बतलायेंगे।

नागरिक;– गुरु महाराज, इस दुनिया को आप के दर्शन का लाभ कब होगा?

विद्यारण्यः– हम यहीं संचार करते रहते हैं। या मौन ध्यानस्थ रहते हैं। उचित समय पर प्रकट होकर हम सहायता देते हैं।

नागरिकः– आप के आशीर्वाद से हमें आशा है कि हमारी हालत फिर सुधरेगी। हम गुरुवर की छत्रछाया में हैं ही। आपकी कृपादृष्टि से हम ईश्वर को भी प्रसन्न कर लेंगे। फिर गत साम्राज्यों की तो क्या कीमत है?

[विद्यारण्य अदृश्य हो जाते हैं]

पुजारीः– भाई, मैंने अपराध किया। अनजाने मैंने तुह्में दोष दिया।

नागरिकः– भाई अपराध तो मेरा है। दुख के मारे मेरे मुंह से न जाने क्या क्या निकल गया। अभी गुरुदेव की कृपा हो गई और ज्ञान भी हुआ। पुरुष को पहिले प्रयत्न करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये, साथ साथ ईश्वर की कृपा भी सफलता के लिये ज़रूरी है। इन दोनों के सुसंयोग के बिना कार्य सिद्धि कैसे होगी?

पुजारीः– सच है पंपाधिनाथ को भजना आवश्यक है। वह विश्वरक्षक है। वह मंगलमय परमात्मा सब का मंगल करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्राज्य-स्मरण

अब तो मुसलमान भाई हिंदुस्थान के स्थिर निवासी बन गये हैं। वे आज हिंदुओं के पड़ोसी तो हैं ही और कहीं कहीं भाई दोस्त भी बन गये हैं। एक दुखकारक समय ऐसा था कि जब वे केवल तूफ़ान के समान हमले करते थे, जहाँ तहाँ लूट खसोट करते थे और. इधर उधर नष्टता और भ्रष्टता फैला देते थे। आशा है कि वैसे दिन फिर हिंदुस्थान को कभी नहीं आयेंगे।

ग्यारहवीं शताब्दी का आरंभ था कि जब मुसलमान पहले वायव्य सीमा के द्वारा इस भारतवर्ष में घुस पड़े। वे बढ़ते बढ़ते चौदहवीं शताब्दी तक रामेश्वर जा पहुँचे। अल्लाउद्दीन खिलजी ने देवगिरी (दौलताबाद,) पर हमला किया (१२८३ ई. सन्)। मुबारक ने (१३१८ ई.) तो देवगिरि के राजा हरिपाल को अमानुषिक रीति से मार डाला और महम्मद तुग़लक ने (१३२५–१३५१ ई.) उसे अपनी राजधानी बनाया। वारंगल, दोरसमुद्र के राजा पराजित हो गये (१३२३ ई.)। कहते हैं कि मलिक काफूर रामेश्वर गया और वहाँ उसने एक मसज़िद भी (१३१० ई.) बनवाई। यह सच हो या न हो, इतिहास से पता चलता है कि उसने मलबार के किनारे पर एक मसज़िद अवश्य बनवाई। यह निरंकुश मत्त हाथी की भांति मुसलमानों की जो दौड़ थी, और जो शायद थोड़े ही दिनों में कन्याकुमारी तक जा पहुँचती, उसे कर्नाटक की एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटीसी रियासत ने पहले रोका, उस प्रचंड प्रवाह को थोड़ा पीछे हटाया और करीब दो सौ पचास बरस तक एक बड़ी और अभेद्यसी दीवार सामने खड़ी कर दी। उस छोटीसी रियासत का नाम था आनेगुंदि और वही वटबीज पश्चात् बन गया विजयनगर का विशाल साम्राज्य जिसकी छत्रछाया में दक्खिन के राजा महाराजा, हिंदुओं की राज्यलक्ष्मी, और आर्यसंस्कृति शान्ति से दो शताब्दी तक रहीं और उन्होंने विकास भी पाया।

इस साम्राज्य का वर्णन, नुनिझ (सन् १५३५–३७ ई.) और पेज़् (सन् १५२०–२२ ई.) इन दो पोर्तगीज़ व्यापारियों ने और निकितन, (सन् १४६९–७४ ई.), बारबोसा (सन् १५१६ ई.), निकोलो कांटि (सन् १४२०–२१ ई.) इत्यादि रूसी, पोर्तगीज़, इटालियन प्रवासी और इतिहासकारों ने तथा इब्नबतूता (सन् १३३३–४२ ई.), अब्दुर्रज्ज़ाक़ (सन् १४४२–४३ ई.), फरिश्ता (सन् १३७६ ई.) आदि मुसल्मान इतिहासकार और दरबारी पंडितों ने बहुत विस्तारपूर्वक किया है। उस विजयनगर शहर का और उस साम्राज्य का कम से कम थोड़ासा वर्णन यहाँ देने का मुझे मोह होता है, किन्तु कलम को रोकना चाहिये क्यों कि वह सब लिखने का यह स्थान नहीं है। जिन पाठकों को विशेष उत्सुकता हो उनसे मेरी प्रार्थना है कि वे अंग्रेजी में मद्रास युनिव्हर्सिटी से Sources of Vijayanagar History, सिवेल महाशय का 'विस्मृत साम्राज्य' (A Forgotten Empire), सूर्य नारायणरावजी का 'अविस्मरणीय साम्राज्य' (Never to be

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Forgotten Empire), सालेतोर का विजयनगर की 'सामाजिक तथा राजकीय अवस्था' और यदि इस साम्राज्य के अंत की अवस्था जाननी हो तो फ़ादर हिरास (Father Herras) का 'अरविडु वंश' (The Aravidu Dynasty) ये ग्रंथ अवश्य पढ़े जायं। यहाँ मेरा इतना ही कहना है कि, इस विस्तृत कर्णाटक साम्राज्य का पुण्य स्मरण और एक कोमल नवयुवक के अंतकरण पर उसका परिणाम, यही इस छोटे नाटक का मुख्य विषय है।

यह नाटक अच्छी तरह से समझने के लिये एक दो बातें जान लेना आवश्यक है। इस साम्राज्य की प्राण प्रतिष्ठा विद्यारण्यजीने सन् १३३६ में की, हुक और बुक इन दो वीर बंधुओं को इस त्यागी सन्यासी ने राज्यस्थापना की प्रेरणा दी और वे भाई अंत तक इस सन्यासी के परमभक्त और एकनिष्ठ रहे, ऐसी गवाही इतिहास देता है। अब वह वीर सन्यासी जो "ज्ञानिना चरितुं शक्यं सम्यक् राज्यादि लौकिकम्" इस अमूल्य वचन की प्रत्यक्ष मूर्ति था, वह था कौन ? इस बात को जानना आवश्यक है। उस का पूर्वाश्रम का नाम था माधव या माधवाचार्य वह है प्रसिद्ध वेदांत ग्रंथ 'पंचदशी' का कर्ता, कि जिसमें से उपर का संस्कृत वाक्य उद्धृत किया गया है। वह था बड़ा भाई सायणाचार्य का जिसने वेदभाष्य लिखकर वेदार्थ को सुगम कर दिया। श्रीमान् शंकराचार्य से स्थापित आदिपीठ जो शृंगेरी में है उसको भी इस सन्यासी ने बहुत दिनों तक अलंकृत किया। इसी कारण से आज भी उस मठ के अधिपतियों की 'कर्णाटक सिंहासन स्थापनाचार्य' यह उपाधि है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी बात यह है कि विजयनगर उस स्थान पर बसा गया था कि जहाँ रामायण काल में हनुमान आदि के साथ सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर रहता था और जहाँ रामचन्द्रजी उससे मिले, वानरों के साथ मित्रता की और रावण को हराने का निश्चय किया। तीसरी बात यह है कि आज भी इस स्थान में बहुतसे भग्नावशेष मौजूद हैं। वे यात्रियों को गत वैभव का स्मरण भली भांति कराते हैं और उन्हें देखने से करण एक ही साथ विस्मय, खेद, ऐश्र, आशा, निराशा आदि भावनाओं से भर जाता है।

वैसी बात तो यह ध्यान में रखनी चाहिये कि रामराय इस साम्राज्य का आखिर का आधारस्तंभ था, और वह रक्कस तंगड़ी की (जिसे भूत में तालीकोट कहते हैं) लड़ाई में (सन् १५६२ ई.) मारा गया। पश्चात् विजयी मुसल्मानों ने आकर पांच महिने तक शहर में वास किया, उसको खूब लूटा और उसका सत्यानाश कर दिया!

यह मौलिक नाटक कर्नाटक भाषा में है। मूल पुस्तक का नाम 'नागरिक' जिसका अर्थ 'नगरवासी' होता है। मुझे यह अन्वर्थक नहीं जंचा। इस लिए मैंने 'साम्राज्यस्मरण' यह दूसरा नाम भी इस को दिया है। यह हिन्दी नाटक उसी कर्णाटक नाटक का अनुवाद है। इधर उधर कहीं वाक्यों में या शब्दों में कुछ हेर फेर हुआ होगा अधिक नहीं। अनुवाद और प्रकाशन कार्यार्थ स्वीकृती देने के लिए मूल लेखक श्री एम्. आर. श्रीनिवासमूर्तिजी का मैं आभारी हूँ

—रंगनाथ दिवाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Printed by Madhav Narayan Mangalwedkar at the Kalasindhu Press Dharwar and published by Gurunath Joshi, Hon. Secretary, Hindi Jnanayatri Mandal, Dharwar.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

STOCK VERIFY
2020
G.K.V. Library

SAMPLE STOCK VERIFICATION
19..

VERIFIED BY..........

RA 61.1,SRI-N
37576

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar